अक्टूबर 2023 ❖ मूल्य 25 रुपए

नवरचना

विकास के अनुकरणीय मॉडल आपके द्वार

वीरांगना दुर्गावती विशेषांक

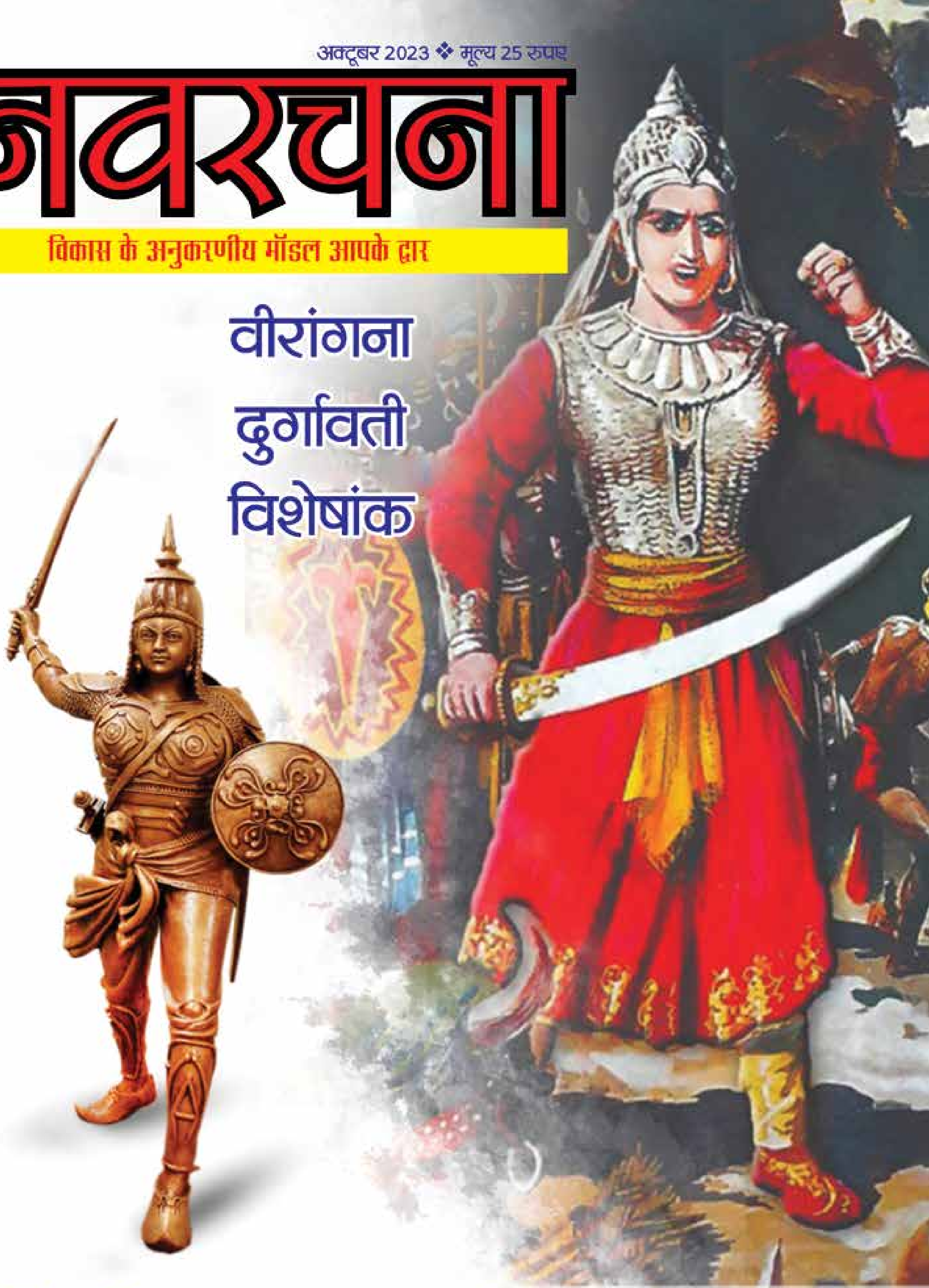

दीनदयाल शोध संस्थान

मुख्यमंत्री
लाड़ली बहना योजना
₹ 3000
तक बढ़ेगी राशि
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
21 वर्ष से ही मिलेगा लाभ
1 करोड़
25 लाख
बहनों
को
हर महीने
₹ 1000
राजकुमारी
संपर्क : ग्राम पंचायत, वार्ड कार्यालय और जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग, हेल्पलाइन नंबर 0755-2700800

संस्थापक
नानाजी देशमुख

प्रबन्ध सम्पादक
अमिताभ वशिष्ठ

सम्पादक
राजेश दुबे

आवरण सज्जा एवं लेआउट
लक्ष्मी नारायण शुक्ला
अंशुमान सिंह
सतीश मालवीय

विशेष सहयोग
आशीष सक्सेना

प्रकाशक
अभय महाजन
दीनदयाल शोध संस्थान के लिए
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर, रानी झांसी मार्ग, झण्डेवाला एक्स., नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित
दूरभाष : 23526735
ईमेल : dridelhi1@gmail.com
info@dri.org.in

मुद्रक :
प्रितिका प्रिंटर्स
ए-21/27, नारायण इण्ड. एरिया
दिल्ली-110028

पृष्ठ सं. 6
वीरांगना रानी दुर्गावती प्रतिमा अनावरण

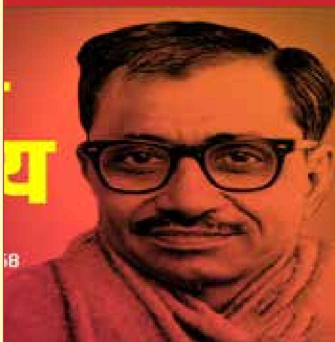

पृष्ठ सं. 21
पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की 55 वीं पुण्यतिथि

पृष्ठ सं. 23
भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की 13वीं पुण्यतिथि

पृष्ठ सं. 52
चित्रकूटधाम पधारे श्री योगानंदेश्वर पीठाधिपति कर्नाटक, आरोग्यधाम में संस्थान के कार्यकर्ताओं को दिया आशीर्वचन

नेहरु युवा केन्द्र सतना एवं रीवा का सामुदायिक विकास प्रशिक्षण 46
युवा दिवस पर ओपन कैम्पस में चयनित छात्रों को मिला आफर लेटर 48
पद्मश्री से नवाजे गए बुंदेलखंड के जल योद्धा श्री उमा शंकर पांडेय ने सियाराम कुटीर पहुंचकर नानाजी को किया नमन 51
कीटनाशकों की उपयोगिता पर किसान संगोष्ठी 54
चित्रकूट हुआ योगमय, 108 स्थानों पर चला योग शिविर 64

बहुरत्ना वसुंधरा भारत की वीरांगना रानी दुर्गावती का 500 जन्म शताब्दी वर्ष

इतिहास में गोंडवाना साम्राज्य की रानी दुर्गावती की वीरता अद्वितीय ❖ विश्व की पहली महिला योद्धा थी महारानी दुर्गावती

स्वतंत्रता के 75 वर्ष हम सम्पन्न कर रहे है। अनगिनत महापुरुषों के बलिदान के कारण ही हम आज आजादी का अमृत महोत्सव के साक्षी बन सके है। इस वर्ष वीरांगना रानी दुर्गावती का 500 जन्म शताब्दी वर्ष है, 5 अक्टूबर को उनकी 500वीं जयंती मनाई जाएगी।

भारत तो बहुरत्ना वसुंधरा है। आज भारत के हर कोने में, हर कालखंड में अनगिनत लोगों ने जिसके नाम भी शायद इतिहास में नहीं होंगे। ऐसे अनगिनत लोगों ने इस राष्ट्र को बनाया भी है, आगे बढ़ाया भी है, ऐसे हर व्यक्तित्व का वंदन-अभिनंदन करते है।

भारत ने सदियों तक मातृभूमि, संस्कृति और आजादी के लिए संघर्ष किया है। गुलामी की कसक, आजादी की ललक इस देश ने सदियों तक कभी छोड़ी नहीं। जय-पराजय आते रहे लेकिन मनमंदिर में बसी हुई आजादी की आकांक्षा को कभी खत्म होने नहीं दी। आज इन सभी संघर्ष के पुरोधा, सदियों के संघर्ष के पुरोधा, उन सबको भी प्रणाम करने का वक्त है और वे प्रणाम के हकदार भी हैं।

वीरांगनाओं एवं वीरों की यह धरा सदैव ही गौरवशाली रही है उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व ही समाज की सबसे बड़ी पूंजी है। देश के इतिहास को तोड़ मरोड़ कर लिखा गया उसमें संशोधन की आवश्यकता है, क्योंकि इतिहास किसी के गुणगान करने के लिए नहीं लिखा जाता इतिहास का तात्पर्य है कि देश के सांस्कृतिक विरासत, सभ्यता एवं संस्कारों के संरक्षण के साथ-साथ प्रगति के पथ पर कैसे अग्रसर हों इस पर कार्य करना किंतु कुछ चाटुकारों द्वारा भारतीय इतिहास में महाराणा प्रताप, शिवाजी, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, टंटया को महान न बताकर औरंगजेब और अकबर को महान बताया गया जो देश की सबसे बड़ी विडंबना है, आवश्यकता आज इसको ठीक करने की है। आज कुछ लोगों द्वारा देश की संस्कृति पर कुठाराघात किया जा रहा है, जिससे समाज को पथभ्रष्ट करके विखंडित किया जा सके और अपने कुटल मंसूबों को पूर्ण कर सकें। किसी भी समाज को समाप्त करने का सुलभ अस्त्र है उसकी मूल संस्कृति को समाप्त कर दो सब कुछ छिन्न-भिन्न हो जाएगा। संस्कार एवं परंपराओं से संस्कृति का निर्माण होता है। भारतीय संस्कृति सदैव ही वसुधैव कुटुम्बकम की रही है यहाँ पूरे समाज को एक रूप में देखते हैं हमारे यहां नारी सर्वत्र पूज्यते का भाव रहा है। हमने अपने इतिहास को ठीक नहीं किया तो हमारी संस्कृति, सभ्यता, संस्कार पर इसी प्रकार हमला होता रहेगा। हमारी परंपराएं और संस्कार ही हमारी संस्कृति को बचाने में हमारी मदद करेंगे। सनातन परंपरा का संरक्षण एवं संवर्धन करना होगा क्योंकि सनातन धर्म वटवृक्ष के समान आज भी जीवंत खड़ा है। हम सभी को इस प्रकार के कुत्सित प्रयासों से बचना होगा और हमें अपनी भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन करके ही दुर्गावती जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

मध्यप्रदेश के सतना जिले के अन्तर्गत चित्रकूट-मझगवां जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है। नाना जी ने इन्हीं सब लोगों को साथ लेकर उनकी पहल पुरुषार्थ से ही सेवा का प्रकल्प खड़ा किया है। जनजातीय, वनवासियों बन्धुओं की बड़ी आबादी वाले इस क्षेत्र में प्रभु श्री राम ने अपने 14 वर्षों के वनवासकाल में से साढ़े ग्यारह वर्ष का समय व्यतीत किया है। भारतरत्न राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों को इस क्षेत्र की सेवा में समर्पित कर दिया। यहां के निवासियों को स्वावलम्बी एवं स्वाभिमानी बनाने के लिए तैयार किया है।

मध्यप्रदेश के इतिहास में गोंडवाना साम्राज्य का एक अलग ही महत्व है। वीरांगना रानी दुर्गावती की वीरता के किस्से नारी शक्ति के अद्वितीय उदाहरण हैं।

दीनदयाल शोध संस्थान, वाल्मीकि परिसर, मझगवां-सतना में 1 अप्रैल 2023, शनिवार, चैत्र माह के शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मा. मोहनराव भागवत जी एवं दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र पराक्रम आदित्य के द्वारा वीरांगना दुर्गावती जी की प्रतिमा का अनावरण किया गया। दीनदयाल शोध संस्थान के मझगवां परिसर में रानी दुर्गावती की प्रतिमा लगने से उनकी छवि जनमानस में निरंतर उभरती रहेगी और लोग उनकी सद्प्रेरणा से सदैव प्रेरित होते रहेंगे। मझगवां में रानी दुर्गावती जी की प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम की दृष्टि से क्षेत्र के सभी ग्रामों में घर-घर वीरांगना रानी दुर्गावती जीवन चरित्र पुस्तिका, कलेंडर एवं आमंत्रण पत्रक बांटे गये। दुर्गावती जी के 4 लाख चित्र, 4 लाख पत्रक, 4 लाख पुस्तिकाएं तैयार कराई गईं जिनके माध्यम से 80 हजार से अधिक परिवारों से प्रत्यक्ष सम्पर्क कर कार्यक्रम की जानकारी उपलब्ध कराई गई।

– अमिताभ वशिष्ठ

वीरांगना दुर्गावती प्रतिमा अनावरण

01 अप्रैल 2023, चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी संवत् 2080

मुख्यअतिथि - डॉ. मोहन जी भागवत
प.पू. सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

कार्यक्रम-

- स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर प्रदर्शनी
- पूज्य साधु संतों के दर्शन एवं आशीर्वाद
- ग्रामीण क्षेत्र की विरासत एवं परम्परा पर सांस्कृतिक कार्यक्रम
- पौष्टिक अनाजों की उपयोगिता पर प्रदर्शनी

आप सभी प्रातः 10 बजे सादर आमंत्रित है। कार्यक्रम पश्चात सहभोज का आयोजन है।

स्थान- महर्षि वाल्मीकि परिसर,कृष्णा देवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय एवं कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां जिला सतना, मध्यप्रदेश

दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट

वीरांगना रानी दुर्गावती प्रतिमा अनावरण

चैत्र शुक्ल एकादशी संवत् 2080 (01 अप्रैल, 2023)

भारत वर्ष अनेक वीर और वीरागंनाओं की जन्मभूमि रही है। इस पावन भूमि में अनेक वीरों और वीरागंनाओं नें अपने कार्यां से न केवल अपना वरन् भारतवर्ष का भी नाम संसार में अमर किया है। ऐसे ही वीर और वीरागंनाओं में से एक रानी दुर्गावती हुई जिन्होंने स्वयं को एक सशक्त महिला, कुशल प्रजापालक और एक अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति के रूप में स्थापित किया।

वीरागंना रानी दुर्गावती गढ़ा साम्राज्य की शासक महारानी थीं। वो भारत की एक प्रसिद्ध गोंड आदिवासी वीरांगना थीं, जिनका जन्म दुर्गाष्टमी 5 अक्टूबर 1524 ईस्वी को कालिंजर के राजा कीर्तिदेव सिंह के यहाँ हुआ था। उनका विवाह दलपत शाह से हुआ था, जो गढ़ा राज्य के राजा संग्राम शाह के पुत्र थे। उन्हें मुगल साम्राज्य के खिलाफ अपने राज्य की सुरक्षा के लिए याद किया जाता है। उनका शैशव कालिंजर में व्यतीत हुआ। स्वाभिमान और युद्धकला उन्हें पिता से विरासत में मिली। शौर्य और सौंदर्य में दुर्गावती मॉ दुर्गा का ही प्रतिबिम्ब थीं। घुड़सवारी और युद्धकौशल दुर्गावती के प्रिय खेल थे। रानी दुर्गावती की प्रजावत्सलता एवं मातृत्वभाव सामान्य व्यवहार में दिखती थी।

अकबर की कुटिल नीति तथा राजविस्तार की लालसा ने मालवा के बाद गढ़ा राज्य को युद्ध की आग में झोंक दिया। रानी पूरी सामर्थ्य के साथ लड़ीं और स्वाभिमानपूर्वक बलिदान हो गयीं। रानी की जीवन गाथा, रणकौशल, साहस, प्रजा पालन तथा बलिदान का उदात्त प्रसंग जन जन तक लोक गीतों में गाया जाता रहा है। दुर्गावती भारतीय इतिहास में शौर्य तथा स्वाभिमान का स्वर्णिम उदाहरण हैं।

नानाजी ने वनाचंल के ग्रामवासियों में किया स्वावलम्बन का भाव जाग्रत

चित्रकूट की धरती को अपनी कर्मभूमि बनाकर, भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख ने वनांचल में निवास करने वाले लोगों के लिए जो समाज कार्य किया है, उससे इस क्षेत्र के ग्रामवासियों में स्वावलम्बन का भाव जागृत हुआ है। मझगवां में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र किसानों की आर्थिक, सामाजिक उन्नति एवं बेरोजगार नवयुवक-युवतिओं को स्वावलंबी बनाने के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा स्थापित कृष्णा देवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय में वनांचल की बच्चियाँ शिक्षित होकर राज्य एवं देश में चित्रकूट क्षेत्र का नाम गौरवान्वित कर रही हैं। प्रत्येक वर्ष वीरांगना रानी दुर्गावती की जयंती जन सहयोग से मनाई जाये, इस हेतु दीनदयाल शोध संस्थान, महर्षि वाल्मीकि परिसर, मझगवां (सतना) में 01 अप्रैल 2023, शनिवार, चैत्र शुक्ल एकादशी संवत् 2080 को रा. स्व. संघ के परम् पूज्य सरसंघचालक मोहनराव भागवत जी एवं मा. श्री वीरेंद्रजीत सिंह जी, अध्यक्ष, दीनदयाल शोध संस्थान

के कर कमलों द्वारा वीरांगना रानी दुर्गावती प्रतिमा का अनावरण किया गया। स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव एवं श्री अन्न-पोषक अनाजों (मोटे अनाज) के मूल्यवर्धित पदार्थों की आकर्षक प्रदर्शनी के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र की विरासत एवं परम्परा पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए, साथ ही इस शुभ अवसर पर हम सब को पूज्य संत महात्माओं के दर्शन प्राप्त हुए। कार्यक्रम के पश्चात सहभोज का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु पूर्व तैयारियाँ एवं योजनाबद्ध बैठकें

● **भूमि पूजन** – दीनदयाल शोध संस्थान, महर्षि वाल्मीकि परिसर, मझगवां में दिनांक 19 जनवरी, दिन-गुरुवार को विधि विधान पूर्वक वीरांगना रानी दुर्गावती प्रतिमा स्थापना स्थल का भूमि पूजन कार्यक्रम मा. संगठन सचिव श्री अभय महाजन, सामाजिक कार्यकर्ता श्री चूणामणि सिंह, उपाध्यक्ष श्री उत्तम बनर्जी, दीनदयाल शोध संस्थान एवं प्रो. भरत मिश्रा, कुलपति, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

● **कार्यक्रम तैयारी की योजना-रचनाः** दिनांक 11 फरवरी 2023 को मझगवां वनांचल क्षेत्र के 74 जनजाति बाहुल्य ग्रामों से 200 से अधिक (प्रत्येक ग्राम से दो से तीन) गणमान्य भाईयों एवं बहनों की उपस्थिति में कार्यक्रम तैयारी की योजना-रचना मा. कलेक्टर सतना श्री अनुराग वर्मा जी एवं मा. संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी, दीनदयाल शोध संस्थान के सानिध्य में बैठक आयोजित की गयी। बैठक में कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु सुझाव प्राप्त हुए।

● **घर-घर संपर्क कर साहित्य एवं आमंत्रण** – दिनांक 5 मार्च, 2023 को मझगवां में वृहद बैठक दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी की उपस्थिति में आयोजित की गई। जिसमें रा. स्व. संघ से मा. जिला संघचालक सतना श्री राम बेटा कुशवाहा, विभाग प्रचारक श्री संजय जी, विभाग सह कार्यवाह श्री लक्ष्मीकांत द्विवेदी, श्रम कल्याण मण्डल के अध्यक्ष श्री भगवान दास गोडानें, प्रवासी श्रमिक आयोग के सदस्य श्री विनोद कुमार रिछारिया,

ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भरत मिश्रा, मुंबई से श्री सुहास बाहुलकर एवं दीनदयाल शोध संस्थान के प्रकल्प प्रमुखों के साथ-साथ मझगवां विकासखंड के विभिन्न ग्राम पंचायतों के प्रमुखों तथा ग्रामीण जनों की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। कार्यक्रम में मझगवां विकासखंड के 96 पंचायतों के 368 राजस्व ग्रामों में संपर्क करके सभी परिवारों में वीरांगना रानी दुर्गावती जी की जीवन चरित्र पुस्तिका एवं कैलेंडर घर-घर पहुंचाने एवं कार्यक्रम में सभी को आमंत्रित करने का निर्णय लिया गया। इस हेतु 96 पंचायतों में एक-एक प्रमुख तथा इन पंचायतों के अंतर्गत आने वाले सभी 368 राजस्व गांवों में एक-एक प्रमुख एवं चित्रकूट, मझगवां, बिरसिंहपुर, बरौंधा और जैतवारा मंडलों में पांच से छः लोगों का एक समूह बनाकर प्रत्येक घर में संपर्क कर साहित्य एवं आमंत्रण का कार्य पूर्ण करने की रचना की गयी।

● **वीरांगना रानी दुर्गावती जी के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार एवं कार्यक्रम के आमंत्रण स्वरूप कैलेंडर एवं पत्रक का विमोचन –** दिनांक 7 मार्च 2023 कार्यक्रम को सफल बनाने एवं गतिविधियों के संचालन हेतु दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र, मझगवां में कार्यक्रम का शुभारंभ विधि-विधान पूर्वक किया गया साथ ही संत महात्माओं के कर कमलों द्वारा वीरांगना रानी दुर्गावती जी के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार एवं कार्यक्रम के आमंत्रण स्वरूप कैलेंडर एवं पत्रक का विमोचन भी किया गया।

इस पावन बेला में चित्रकूट से पूज्य संत श्री रामहृदय दास महाराज (रामायणी कुटी), संत श्री दिव्य जीवन दास महाराज (भरत मंदिर), संत श्री मदन गोपाल दास जी (कामतानाथ प्रथम मुखारविंद), संत श्री नागा राघवेंद्र दास की पावन उपस्थिति में संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी, वीरांगना रानी दुर्गावती शोध समिति पटना कला के

अध्यक्ष श्री रामराज सिंह, सचिव श्री सीताराम विश्वकर्मा सहित अन्य जनजाति कार्यकर्ता एवं संस्थान के समस्त कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

● **वीरांगना रानी दुर्गावती प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम हेतु मझगवां में वृहद बैठक का आयोजन**—वीरांगना रानी दुर्गावती प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम हेतु मझगवां में वृहद बैठक का आयोजन दिनांक 9 मार्च 2023 को किया गया, जिसमें विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, मंत्री, सांसद, विधायकों सहित कई जिलों के सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहे। जिसमें रा. स्व. संघ के मा. जिला संघचालक श्री राम बेटा कुशवाहा, सह विभाग कार्यवाह श्री लक्ष्मीकांत द्विवेदी, पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री मध्यप्रदेश श्री रामखेलावन पटेल, पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश शासन श्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, सांसद सतना श्री गणेश सिंह, रीवा सांसद श्री जनार्दन मिश्रा, चित्रकूट बांदा - सांसद श्री आर.के. सिंह पटेल, सिरमौर विधायक श्री दिव्य राज सिंह, रामपुर बाघेलान विधायक श्री विक्रम सिंह (विक्की), त्योंथर विधायक श्री श्याम लाल द्विवेदी, हमीरपुर विधायक डॉ. मनोज कुमार प्रजापति, महोबा एम. एल. सी. एवं जिला अध्यक्ष श्री जितेंद्र सिंह आदि सज्जन वृन्द उपस्थित रहे। सभी सम्मानित अतिथियों द्वारा प्रतिमा अनावरण स्थल एवं कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण कर तैयारियों का अवलोकन किया गया।

● **वीरांगना दुर्गावती जी के 4 लाख चित्र, 4 लाख पत्रक, 4 लाख पुस्तिकाएं तैयार कराई गई**—दिनांक 12 मार्च 2023 को दीनदयाल शोध संस्थान के महर्षि बाल्मीकि परिसर कृष्णा देवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवां सतना में बैठक का आयोजन, जिला संघचालक सतना श्री राम बेटा कुशवाहा की उपस्थिति में संपन्न हुई जिसमें सह विभाग कार्यवाह श्री लक्ष्मीकांत द्विवेदी, नगर पंचायत अध्यक्ष चित्रकूट सुश्री साधना पटेल, सामाजिक कार्यकर्ता श्री चूणामणि सिंह, रानी दुर्गावती शोध समिति के अध्यक्ष श्री रामराज जी एवं दीनदयाल शोध संस्थान के समस्त प्रकल्पों के कार्यकर्ताओ के साथ साथ मझगवां विकासखंड से 96 पंचायतों के 368 राजस्व ग्रामों के 300 से अधिक ग्रामीण जन उपस्थित रहे। बैठक उपरांत सभी को अपने अपने ग्रामों में घर-घर वीरांगना रानी दुर्गावती जीवन चरित्र पुस्तिका, कलेंडर एवं आमंत्रण पत्रक उपलब्ध कराये गये। सभी तक जानकारी पहुँचाने हेतु वीरांगना रानी दुर्गावती जी के 4 लाख चित्र, 4 लाख पत्रक, 4 लाख पुस्तिकाएं तैयार कराई गईं। बैठक में दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने सभी अतिथियों के समक्ष कार्यक्रम की विस्तृत कार्ययोजना एवं रूपरेखा का प्रस्तुतिकरण कर कार्यक्रम को और बेहतर बनाने हेतु सुझाव मांगे। उन्होंने कहा कि नानाजी कहते थे कि जनता की पहल और पुरुषार्थ एवं सहभागिता से किए गए कार्य स्थायी होते हैं।

80 हजार से अधिक परिवारों से प्रत्यक्ष सम्पर्क

कार्यक्रम को सम्पन्न कराने के लिए दीनदयाल शोध संस्थान ने अपने सभी कार्यकर्ताओं और सामाजिक कार्यकताओं के सहयोग से चित्रकूट, सतना, महोबा, बंदा, पन्ना, छतरपुर, रीवा, कटनी आदि जिलों के गँवों व नगरों में घर घर संपर्क कर 10 रुपये राशि संकलन की सूचना दी गई, जिसमें सहयोग राशि के रूप में 30 हजार से अधिक परिवारों ने सहयोग दिया। सभी तक जानकारी पहुँचाने हेतु वीरांगना रानी दुर्गावती जी के 4 लाख चित्र, 4 लाख पत्रक, 4 लाख पुस्तिकाएं तैयार कराई गईं जिनके माध्यम से 80 हजार से अधिक परिवारों से प्रत्यक्ष सम्पर्क कर कार्यक्रम की जानकारी उपलब्ध कराई गई।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर संगीतमय अखंड मानस पाठ का आयोजन

ग्रामोदय विश्वविद्यालय की कला संकाय के छात्र–छात्राओं द्वारा कार्यक्रम की तैयारियों में रंग भरते हुए

कार्यक्रम में आये हुए सभी गणमान्य बंधु-भगिनियों का स्वागत एवं पंजीयन केंद्र में तिलक कर अंगवस्त्र भेंट किया गया तथा सभी आगंतुकों को मिष्ठान के साथ वीरांगना दुर्गावती जी का साहित्य भी प्रदान किया गया।

जनजातीय गौरव प्रदर्शनी – जनजाति समूह के लगभग 60 नायकों का जीवन वृत्त प्रदर्शित

कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा श्री अन्न, पोषक अनाजों एवं खाद्य प्रसंस्कृत उत्पादों की प्रदर्शनी

परम पूज्य सरसंघचालक जी का पारम्परिक वनवासी वाद्ययंत्रों के वादन के साथ प्रतिमा अनावरण स्थल की ओर आगमन

परमपूज्य सरसंघचालक जी मूर्ति अनावरण करते हुए

ग्रामीण क्षेत्र की विरासत एवं परंपरा पर वनवासी बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण

गरिमामय मंच – मुख्य मंच पर जनजातीय समाज का दिखा प्रतिनिधित्व

आशीर्वचन– मंडला के संत पूज्य मदन मोहन गिरी जी महाराज

ॐ

श्री गुरूवे नमः

भगवान श्री रामचन्द्र जी के श्री चरणों में प्रणाम करते हुये समस्त महापुरूष, विराजमान मंचासीन अतिथि एवं हमारे सरसंघचालक मोहन भागवत जी जैसे तपस्वी हमारे देश में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। ऐसे ही सम्माननीय सभी महापुरूषों को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम! समस्त भारत वासियों, देशवासियों, सभी को कोटि-कोटि नमन करते हुए वीरांगना दुर्गावती जी के जिले से जहां इनका जन्म हुआ है, वहां से मुझे आमंत्रण दिया गया और मैं उनके आमंत्रण सुनते ही श्री रामचन्द्र जी के ही वनवास क्षेत्र में पहुंच के सभी महापुरूषों का दर्शन किया। वे धन्य हैं, जिन्हें ऐसे महापुरूषों का आर्शीवाद सदा मिलता रहा। वीरांगना दुर्गावती के पदचिन्हों के अनुसार हम सभी को चलना चाहिए। हमारे देश में सनातन धर्म शाश्वत रहे, हम परम वैभव को प्राप्त करें इसके लिए सबको प्राणपण से जुटना होगा, यही मेरा संकल्प और सिद्धांत है। धन्यवाद!

परम पूज्य सरसंघचालक श्री मोहन भागवत जी का उद्‌बोधन

सन्त चरणों में मेरा विनम्र नमस्कार, मंचस्थ सभी मान्यवरों का अभिवादन, उपस्थित नागरिक सज्जन, माता-भगिनी आप सबका अभिनन्दन! मझगवां को हम छोटी जगह क्यों मानते हैं? ये जगह छोटी नहीं है। यहां पर रानी दुर्गावती का राज्य चला, और यहां परम श्रद्धेय नाना जी की तपस्या हुई। रहने के लिए यह स्थान कैसा है, खाने के लिए कैसा है इसका विचार नहीं करना है, यह हमारे लिए पवित्र स्थान है। *स्वतंत्रता के 75 वर्ष हम सम्पन्न कर रहे हैं, जिन महापुरुषों के कारण हम इन 75 वर्षों को आज संपन्न कर पा रहे हैं, उन महापुरुषों की नक्षत्र तालिका में रानी दुर्गावती का नाम पहला है। क्योंकि जो ये कट्टरपंथी आक्रमण की लहर चली भारत में धीरे-धीरे लापता हो गई, सब दूर निराशा, किसी को कोई ठौर नहीं ऐसे कालावधि में रानी दुर्गावती जी के शौर्य पराक्रम से 20-25 वर्ष तो ये आक्रमण की लहर इस इलाके को स्पर्श नहीं कर सकी और उनका बलिदान होने के बाद भी अंग्रेजों के राज्य के जाने तक स्वतत्रंता की जो ज्वाला वो यहाँ पर सुलगा कर गई थी वो निरन्तर जलती रही।* रानी दुर्गावती जी का जो साम्राज्य था उसके दक्षिण के आखिरी छोर पर मेरा गांव है चन्द्रपुर। इस पूरे इलाके में अपने देश में भी अनेक राज्य थे, अपने देश के अनेक राजा थे लेकिन पूरे इलाके की विशेषता मोटा-मोटी ये दिखती है कि इनमें आपस के विवाद तो रहे लेकिन इन लोगों ने आपस के झगड़े समेटकर जो विदेशी थे, उसके खिलाफ सतत् संघर्ष किया, कोई शरण नहीं गया। कभी जीते, कभी हारे लेकिन उसकी परवाह किये बिना सतत् संघर्ष इस क्षेत्र में जारी रहा, क्यों जारी रहा? उसका कारण था रानी दुर्गावती जैसी वीरागंना। उनका शौर्य पराक्रम तो प्रसिद्व ही है। कितने ही बार विदेशी आक्रान्ताओं को उन्होंने नाको चने चबवायें। घर के अंदर यदि भेद नहीं होता तो वे कभी हारती नहीं। उनका स्मरण करते समय एक सबक हम सबको यही सीखना चाहिए कि अपने छोटे स्वार्थ के कारण देशहित को धक्का लगाने वाली प्रवृत्ति हम लोगों में कभी न पनपे इसकी हमको चिन्ता करनी पड़ेगी। रानी दुर्गावती कभी भी दूसरों की वीरता के कारण नहीं हारी, उनके साथ विश्वासघात हुआ, किसके द्वारा हुआ? अपने ही लोगों के द्वारा हुआ। ऐसा होने के बाद भी इतनी उदार मन की वो थी कि उन्होंने मरने तक सबको क्षमा किया। हद से पार हो गई बात तब सजा दी लेकिन जहाँ अपने लोगों की गलतियों हैं, स्वार्थ है, गद्दारी है उसमें भी उन्होंने ख्याल रखा कि अपना व्यक्ति है वो रास्ता भटका गया होगा, वो रास्ता भूल गया होगा हम अपने लोगों को नहीं भूलें। कितने ही ऐसे लोगों को वो मृत्युदण्ड दे सकती थीं लेकिन उन्होंने नहीं दिया, उन्होंने सभी को ससम्मान विदा किया। हम सब भारतवासी हैं, हम सब भारत के लोग हैं, हमारा एक समाज एक राष्ट्र है, हम आपस में एक दूसरे को क्षमा करके, सबको साथ लेकर चलेंगे क्योंकि हमारी शक्ति ऐसी है। हमारे सामने खड़े रहने की ताकत किसी की नहीं है। अन्दर के भेडियें जब टांग खींचते हैं तब हम गिर जाते हैं। यह हमारे इतिहास का सबक है।

रानी दुर्गावती जी के इतने उज्ज्वल पराक्रम को, जिसका गुणगान सारी दुनिया करती है, जिस पद्धति से उन्हांने लड़ाई लड़ी उस पद्धति का अध्ययन आज भी मिलिट्री करती है। जिस प्रकार का पराक्रम, शौर्य उन्होंने दिखाया, अन्तिम क्षण तक उस वीरता का स्मरण करके, उस वीरता के वर्णन पढ़ कर, रोमांचित हो जाते हैं, मुर्दा दिल में जोश का संचार होता है, ऐसा उनका चरित्र है।

केवल शौर्य पराक्रम नहीं उन्होंने राज्य का पालन किया, प्रजा का पालन किया, उनकी राज्य व्यवस्था भी एक अत्यन्त अच्छी राज्य व्यवस्था थी, उत्कृष्ट थी, उदाहरण स्वरुप थी। उनके राजत्व में गोंडवाना एक समृद्ध साम्राज्य था। सब लोग सुखी थे, लोगों के पास धन-धान्य, समृद्धि सब कुछ था। इतना बड़ा साम्राज्य पति के बाद अकेली महिला सँभाले, अपने नवजात को राजा बनाकर राज्य देखें, कितना उत्तम प्रशासन उन्हांने किया, कहीं कोई कमी हो गई तो उसे पूर्ण करने का प्रयास किया। अच्छी खेती करने वालों को बाहर से बुलाया, अपने लोगों को खेती करना सिखाया। बाहर से अच्छे कवि, विचारक भाषाओं के तहत, साहित्यिक ऐसे लोगों को बुलाया, विद्वानों को सम्मानित किया, अपने यहां पर लोगों का ज्ञान बढ़ाने के लिए उनको वहां स्थापित किया। इस प्रकार का एक उत्तम प्रशासन जो सीधा अपने प्रजाजन के हृदय को स्पर्श करता हो और सब प्रकार की समृद्धि लाता हो, न्याय का साम्राज्य स्थापित करता हो, ऐसा उत्कृष्ट प्रशासन दिया और सबके प्रति वह प्रशासन समदृष्टि था। उन्होंने पूजा-सम्प्रदाय के कारण, प्रान्त आदि के कारण किसी को पराया नहीं माना। उनके राज्य की जो प्रजा थी उनके लिए उनकी अपनी थी। आक्रान्ता जो उस समय के इस्लाम को मानने वाले थे लेकिन दुर्गावती जी के पास कन्धे से कन्धा लगाकर लड़ने वाले आखिरी समय तक साथ देने वाले और बलिदान हो जाने वाले मुस्लिम लोग भी थे। वो सबको ऐसे जोड़ने वाली थी। सब प्रकार की विविधता का सम्मान करने वाली थी और ये सिखाने वाली थी कि इनको लेकर आपस में भेद नहीं करना चाहिए। सबको साथ मिलजुल कर चलना चाहिए। अपना देश विविधताओं का देश है। उसमें अलग-अलग प्रकार हैं लेकिन प्रकार अलग होने से हम अलग नहीं होते। हम सब भारत माँ की संतान हैं। हम सब एक हैं, हम सबको मिलकर अपने आपको समृद्ध बनाना है, सारी दुनिया को समृद्ध बनाना है। इसलिए एक दूसरे की सुधि रखे, हम लोगों में कोई दुखियारा न रहे, हम लोगों में कोई गरीब न रहे, हम लोगों में कोई ऊँचा-नीचा न रहे, सब बराबरी में रहें इसकी चिन्ता करो।

उस जमाने में स्वयं उनका विवाह जाति-भेद की तिलांजलि देने वाला एवं सामाजिक समरसता का उदाहरण था। चंन्देल वंश की राजकुमारी गोंड राज्य के अधिपति दलपत शाह की पत्नी बनती हैं। उस समय कल्पना कीजिए आप, कैसा रहा होगा? संदेश ये दिया, ये दोनों ओर से योजनाबद्ध तरीके से हुई बात है, आनन-फानन में नहीं हुआ उनका विचार चला और जब दोनों को लगा कि देश के हित के लिए भेद भूलकर आगे बढ़ने का जीवन कैसे होता है, इसका उदाहरण रखने का यह समय है, तब वो विवाह हुआ है।

आप इतिहास पढ़िये अपने समय से कहीं आगे चलने वाली रानी दुर्गावती थीं। पता नहीं उनको कही अन्दर से ये विचार आया होगा या उन्होंने देखा होगा कि 15 अगस्त 1947 को सब प्रकार की गुलामी तोड़कर भारत जब मुक्त होगा तो उनको नई राह पर चलने के लिए कोई दिशा देनी पड़ेगी, वो दिशा क्या हो सकती है?

जितने भी विदेशी आक्रान्ता अपने यहाँ आये, उनकी व्यवस्थाएं अलग थीं, उनके लिए ठीक ही थीं लेकिन उन व्यवस्थाओं को उन्होंने यहाँ जबरदस्ती हम पर थोपा। हमारी व्यवस्थायें कैसी थी? देश के मालिक कौन हैं? जहाँ से आक्रान्ता आते थे वहाँ राजा सब कुछ होता था। राजा का सब, राजा के मर्जी पर सब हैं। आप खेती कर रहे हो, आपकी खेती जब्त करने का अधिकार है क्योंकि आप का जीवन भी उसी की देन है। हम सब उसके दास हैं। हमारे यहाँ भी राजा थे लेकिन ऐसे नहीं थे। हमारे यहाँ राजा रक्षक था, समाज जीवन ठीक चले इस तरीके का रक्षक। आजकल कहते है लॉ एण्ड आर्डर उसका संरक्षक था। सीमायें सुरक्षित रहें, इसको देखने वाला था और जिस नियम से प्रजा सुख और शान्ति बन्धुभाव से आगे बढ़ती है, उस नियम का जिसे हमारे यहाँ धर्म कहते है, उसका रक्षक था, वो पूजा को लेकर भेद नहीं करता था और बाकी सब लोग स्वतंत्र थे लेकिन अपने मर्जी से राजा के शासन का अनुसरण करते थे। मालिक कोई नहीं था मालिक तो भगवान है, हम सब लोग ट्रस्टी थें, जो मुद्रायें थी, जो पैसा था, धन था, व्यापार करने वाले लोग व्यापार करते थे, कमाते थे, लेकिन जितना कमाते उसका 80 प्रतिशत बाँटने में अपने आप को बड़ा मानते थे क्योंकि वे सोचते

थे धन अपना नहीं हैं। धन की व्यवस्था करने का काम अपना है। हम इस धन के ट्रस्टी हैं। जंगलों में बसने वाले हमारे सब बन्धु, वन के बन्धु, वो उस जंगल के रखवाले थे। उस जंगल के ट्रस्टी थे, उस जंगल में उनका अधिकार था लेकिन वो ये जानते थें कि अधिकार हमको इसलिए दिया गया है कि इस जंगल को सुरक्षित रखकर अच्छी तरह बढ़ाते हुए समाज को जब-जब आवश्यकता पड़े, इस जंगल से उनको भी मिले, ये हम देखेगें और जंगल से सबको मिले लेकिन जंगल को कोई लूट न पाये, ये देखने का उनका काम रहता था।

विदेश की व्यवस्थायें आयीं और हम अपने ही देश में पराधीन हो गये। अब हमको फिर से धीरे-धीरे उस तरफ जाना पड़ेगा और हम जायेंगे, सामान्यतया लोग प्रयास करेंगे उसमें भी हम साथ रहेंगे। इस प्रकार कि नीतिगत दिशा देने में भी हम साथ रहेंगे और ये सच्ची स्वतंत्रता और सबका बन्धुभाव कायम रखकर, सबका ऐक्य कायम रखकर दायित्वों को आगे बढाने के लिए जो कुछ होगा, उस पर हम लोग दीनदयाल शोध संस्थान जैसे संस्थान, कल्याण आश्रम जैसे संगठन, संघ के स्वयंसेवक सब लोग समाज के साथ चलेंगे और समाज को साथ लेकर चलेंगे। हमारे यहाँ आक्रमण काल में, गुलामी के काल में ऐसे राजा हुए, उन्होंने उस राह को मिट्टी में मिला दिया। जैसे उधर शिवाजी महाराज ने किया वैसे उनके पहले यहाँ पर रानी दुर्गावती ने किया और इसलिए मैं कहता हूँ कि स्वतंत्रता के 75 साल सम्पन्न करने का भाग्य हमको उनके कारण मिला है और 100वें साल हम सम्पन्न करेंगे तब हमको कैसा होना चाहिए, उसकी दिशा भी हमको उनसे मिलती है।

रानी दुर्गावती हमारी पूज्य हैं, हमारे लिए देवी जैसी हैं लेकिन उनका स्मरण करते समय उनका ये स्वाभिमानी चरित्र, उनका ये पवित्र चारित्र्य, उनका वह अतुलनीय शौर्य, देशभक्ति, हर हालत में हर परिस्थिति का सामना करना, शरण नहीं जाना, इस प्रकार उनका धैर्य, जन-जन के प्रति उनका अपनापन कुशलतापूर्वक सब लोग सहभागी हो ऐसा विकास का पथ उसके निर्माण करने की कला, उसके निर्माण करने के पीछे जो मूल तत्व है वह सब भारतवर्ष के समाज की एकता आदि-आदि उन्होंने स्वयं सिद्ध की हुई बाते ये हमारे लिए अनुकरणीय हैं। हममें से जो अध्येयता है, जो जानते हैं, वो अध्ययन करें, जो प्रजा से संवाद करते हैं, वो सब इन बातों का प्रचार करें और उन सब बातों को समझकर, हम सारे लोग उनके पथ का अनुसरण अपने आचरण से करें, इसकी बहुत आवश्यकता है।

मूर्ति यहाँ क्यो लगायें है? ये मूर्ति नहीं लगती तो क्या हम दुर्गावती जी को भूल जाते, नहीं भूल जाते। नाम तो उनका रहता ही लेकिन नाम के साथ उनका रूप भी रहना है। वो रूप केवल एक शूरवीर महिला का रूप नहीं है, भावी भारत के भाग्य का पथ जिसके रूप में साकार होकर आया, ऐसे भारत माता की प्रतिमूर्ति का वो रुप हैं। उनके सद्‌गुणों का स्मरण करना है। उनके चिन्तन का स्मरण करना है। जिस चिन्तन के आधार पर अपनी पुण्य संस्कृति का सनातन प्रवाह सतत् बढ़ता आया है। कोई इसको रोक नहीं सका है, रोकने वाले मिट गये।

यह सांस्कृतिक प्रवाह हमारा यहाँ तक चलता आया है। उसके कारण ये बलिदानी वीर-वीरागंना आये हैं। यह हमारे पूर्वज हैं। उनके पद चिन्हों का हमें अनुसरण करना है। उनके जैसा सोचकर उनकी कीर्ति को और आगे बढाना है, चार चॉद लगाना है और संपूर्ण विश्व को शान्ति, भक्ति और मुक्ति का मार्ग दिखाना है, ज्ञान का मार्ग दिखाना है। यह हमारा ईश्वर प्रदत्त कर्तव्य है। उस प्रदत्त कर्तव्य का स्मरण करते हुए 500 साल बाद भी हम रानी दुर्गावती जी का इस प्रकार स्मरण कर सके इसलिए इस मूर्ति की स्थापना यहाँ हुई है वो मूर्ति यहाँ सदैव बनी रहेगी। लोग आयेंगे-जायेंगे उसको देखते रहेंगे। मझगवां छोटी जगह नहीं है। मझगवां बडी जगह है। क्यो बड़ी जगह है इसलिए बडी जगह है क्योंकि ऐसी तपस्या यहॉ पर रानी दुर्गावती जी की हुई।

आज लड़ना नहीं पड़ेगा, सेवा करनी पड़ेगी, कैसे कर सकते है? आज के जमाने में नाना जी ने ये उदाहरण प्रस्तुत किया। दीनदयाल शोध संस्थान उनका काम आगे ले जा रहा है। हम सब लोगां को इसी प्रकार जीना है। अपने लिए नहीं

अपनों के लिए जीना है, स्वाभिमान के साथ जीना है, सबके हित के लिए जीना है, मनुष्यों को जोडने के लिए जीना है, एक-दूसरे की विशिष्टताओं का निर्देश करके तोड़ने के लिए नहीं जीना है। इन बातों को समझकर हम चलें, इसका संकल्प आज हम ग्रहण करें, ऐसी एक विनती मैं आपको विनम्रतापूर्वक करता हूँ और आपने बड़ा सा लम्बा भाषण सुन लिया इसलिए आप लोगों का मैं धन्यवाद करता हुआ मेरे चार शब्द, समाप्त करता हूँ।

आभार प्रदर्शन – श्री अभय महाजन

वीरागंना दुर्गावती जी की प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम में हम सब यहाँ उपस्थित है। पिछले कई वर्षो से हम वीरांगना दुर्गावती जी की जयंती मनाते आ रहें हैं। लगभग एक वर्ष से चर्चा कर रहे थे, दिसंबर में लगभग बातचीत हुई कि कार्यक्रम के निमित्त पूज्य सरसंघचालक जी का समय प्राप्त हो सकेगा। यह हम सब लोगों का सौभाग्य है कि हमारे विचार परिवार के मुखिया आज हमारे बीच हैं और हम सभी को आपका लम्बा सानिध्य मिला। पूज्य सरसंघचालक जी ने अपने व्यस्ततम कार्यक्रम में से जो समय दिया उसके लिए संस्थान की ओर से मैं आपका कोटि कोटि साधुवाद करता हूँ, आभार व्यक्त करता हूँ। चित्रकूट क्षेत्र के मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं व नागरिकों की ओर से मैं आपका धन्यवाद व आभार प्रदर्शन करता हूँ। ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कला संकाय के प्राध्यापक, छात्र-छात्राओं और कुलपति, प्रो. भरत मिश्रा का मै आभार ज्ञापित करता हूँ। प्रतिमा भी लगनी है, बननी है, यह चर्चा चलती आ रही है। इसको पूर्ण करने में विश्वविद्यालय का अभूतपूर्व सहयोग रहा। इसी प्रकार इस पूरे चित्रकूट क्षेत्र से जुड़े हुए मध्य प्रदेश के 6-7 जिले और उत्तर प्रदेश के 6-7 जिलों के प्रतिनिधि, माननीय मंत्री, सांसद, विधायक, जिला पंचायत अध्यक्ष आदि जिन्होंने इस कार्यक्रम में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया, उन सबका मैं पूरे हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

सरसंघचालक जी के साथ जनजातीय समाज एवं विविध सेवा क्षेत्रों से जुड़े 29 लोग रहे सहभोज में शामिल।

कार्यक्रम की प्रमुख झलकियाँ

- प्रतिमा स्थल को दिया गया कालिंजर किले का स्वरूप, जहां जन्मीं थी चंदेलों की बेटी एवं गोंडवाना की महारानी दुर्गावती।
- दुर्गावती के जीवन से जुड़े विभिन्न छुए-अनछुए पहलुओं का बाल्मीकि परिसर में प्रदर्शन देखने को मिला।
- चित्रकूट के ऐतिहासिक, धार्मिक स्थलों सहित महापुरुषों के जीवन दर्शन को भी परिसर में किया गया प्रदर्शित।
- विश्व की पहली महिला योद्धा थी महारानी दुर्गावती, उनका मनाया जा रहा है 500 वी जयंती वर्ष।
- 50 हजार स्क्वायर फीट में बनाया गया सभा मंडप, मुख्य मंच पर जनजातीय समाज का दिखा प्रतिनिधित्व।
- परिसर में जनजातीय गौरव एवं पोषक अनाजों पर लगाई गई आकर्षक प्रदर्शनी।
- प्रवेश स्थल पर आगंतुकों का पेठा से मुंह मीठा करके तिलक एवं गमछा से स्वागत के साथ दिया गया प्रवेश।
- मुख्य मंच के बाएं तरफ बना था संत समाज का मंच और दाएं तरफ था सांस्कृतिक मंच, जहां से जनजातीय विरासत एवं परंपरा को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों की हुई प्रस्तुति।
- कार्यक्रम के उपरांत हुआ सहभोज का आयोजन, हजारों की तादाद में आए वनवासी बंधुओं एवं दूर-दराज से आए लोगों ने किया प्रसाद ग्रहण।
- सरसंघचालक के साथ जनजातीय समाज एवं विविध सेवा क्षेत्रों से जुड़े 29 लोग रहे सहभोज में शामिल।
- जनजातीय नायकों एवं श्रीअन्न-पोषक अनाज की प्रदर्शनी बनी आकर्षण का केंद्र।

बाल्मीकि परिसर में स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान की प्रदर्शनी अखिल भारतीय वनवासी कल्याण परिषद द्वारा लगाई गई। जिसमें जनजाति समूह के लगभग 60 नायकों का जीवन वृत्त प्रदर्शित किया गया, साथ ही स्वराज संस्थान, संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश शासन द्वारा वीरांगना दुर्गावती जी के जीवन चरित्र पर एक भव्य प्रदर्शनी लगाई गई।

श्रीअन्न एवं उससे निर्मित विभिन्न उत्पादों की प्रदर्शनी में दुनिया में मिलेट की 13 वैरायटी मौजूद है, अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के लिए 8 अनाजों- बाजरा, रागी, कुटकी, सांवां, ज्वार, कंगनी, चीना और कोदो को शामिल किया गया है उसकी वृहद प्रदर्शनी कृषि विज्ञान केंद्र गनीवां, मझगवाँ, डिंडौरी, मण्डला एवं जबलपुर कृषि विश्व विद्यालय के अंतर्गत आने वाले कृषि विज्ञान केंद्रों ने प्रदर्शित की। तो वहीं महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्व विद्यालय के फाइन आर्ट विभाग द्वारा अमर शहीदों एवं बलिदानियों के चित्रों की प्रदर्शनी प्रदर्शित की गई।

वहीं दूसरी ओर आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहचान को प्रगति की ओर ले जाने वाली प्रदर्शनी लगाई गई।

दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट में मनाई गई पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की 55 वीं पुण्यतिथि

चित्रकूट 11 फरवरी 2023/ दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्यायजी की 55वीं पुण्यतिथि को दीनदयाल पार्क उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट में समारोह के रूप में मनाई गई। प्रातःकाल से ही संस्थान के विविध प्रकल्प गुरुकुल संकुल, उद्यमिता विद्यापीठ, सुरेन्द्रपॉल ग्रामोदय विद्यालय, आरोग्यधाम, आईटीआई तथा खादी ग्रामोद्योग आयोग प्रशिक्षण केन्द्र के प्रशिक्षणार्थी एवं बच्चों तथा गुरुमाता-पिता सहित कार्यकर्ताओं द्वारा अपने-अपने प्रकल्पों में दीनदयाल जी के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किये गये तथा कार्यकर्ताओं एवं बच्चों द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन से जुड़े प्रेरणादायी प्रसंगों को दैनिक जीवन में आत्मसात करने हेतु मंचन भी किया गया।

> **डीआरआई के शैक्षणिक प्रकल्पों में 'एकात्म मानववाद' का दर्शन पर हुई व्याख्यानमाला**
>
> **पंडितजी की ईमानदारी, सादगी और दर्शन आज भी लोगों को सीख देते हैं**
>
> *– अभय महाजन*

इस अवसर पर संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने बताया कि राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख द्वारा 1968 में पं. दीनदयाल जी के निर्वाण के उपरांत दीनदयाल स्मारक समिति बनाकर उनके काम की नींव दिल्ली में रखी थी। नानाजी द्वारा स्मारक समिति से लेकर दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना तक के सफर में दीनदयाल जी के एकात्म मानवदर्शन को व्यवहारिक रूप में धरातल में उतारने का कार्य सामूहिक पुरुषार्थ से कराकर दिखा दिया कि कोई अकेला व्यक्ति या संगठन विकास की प्रतिमा न दिखे बल्कि जनता स्वयं विकास की वाहक बनें। उनका दृष्टिकोण था कि इसमें केवल नाममात्र की भागीदारी

प्रक्रिया नहीं होनी चाहिये बल्कि ऐसी हो जिसमें लोगों के लिये लोग हों! वे खुद पहल करें, पुरुषार्थ करें, और विकास की प्रक्रिया के सतत् भागीदार बनें।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना था कि समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद व्यक्ति के एकांगी विकास की बात करते हैं, जबकि व्यक्ति की समग्र जरूरतों का मूल्यांकन किए बिना कोई भी विचार भारत के विकास के अनुकूल नहीं होगा। उन्होंने भारतीयता के अनुकूल पूर्ण भारतीय चिन्तन के रूप में 'एकात्म मानववाद' का दर्शन प्रस्तुत किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन के अनेक पक्ष, कई आयाम और अनेक कार्य हैं। कम उम्र में ही दुनिया को अलविदा कहने वाले पंडितजी की जिंदगी से जुड़े अनेक किस्से हैं, जो काफी दिलचस्प होने के साथ-साथ प्रेरणा भी देते हैं। 11 फरवरी 1968 को मात्र 51 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कहने वाले पंडितजी की ईमानदारी, सादगी और दर्शन आज भी लोगों को सीख देते हैं।

सामूहिक कार्यक्रम के रूप में पं. दीनदयाल पार्क उद्यमिता परिसर में स्थापित लगभग 15 फिट ऊँची प्रतिमा पर माल्यार्पण कर संस्थान के सभी महिला पुरुष कार्यकर्ताओं द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की गई। इसके अलावा संस्थान के सभी स्वावलंबन ग्रामीण केंद्रों पर भी दीनदयाल जी की पुण्यतिथि मनाई गई। कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां, गनीवां सहित आवासीय शैक्षणिक प्रकल्प रामनाथ आश्रम शाला पीली कोठी, कृष्णा देवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवां, परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय गनीवां में पंडित दीनदयाल जी के 'एकात्म मानववाद' का दर्शन पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई। इस अवसर पर एचआईएल लिमिटेड के एमडी श्री प्रमोद सैनी एवं दिल्ली से डीआरआई के महाप्रबंधक श्री अमिताभ वशिष्ठ व संस्थान के सभी प्रकल्पों के प्रभारी उपस्थित रहे। ❑

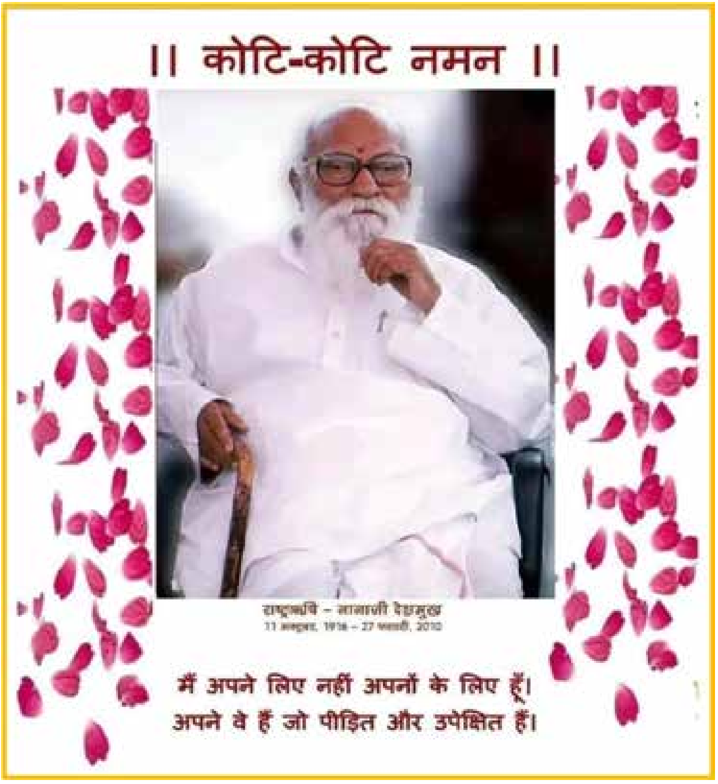

भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की

13वीं पुण्यतिथि पर आयोजित

श्रद्धांजलि कार्यक्रम
26-27 फरवरी 2023

द्वितीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन-सतत विकास के लक्ष्य

- ❖ SDG 1: NO POVERTY
- ❖ SDG 3: GOOD HEALTH AND WELL-BEING

प्रशिक्षण सह कार्यशाला

- ❖ पोषक अनाज "श्री अन्न"- रसायन मुक्त प्राकृतिक उत्पादन, मूल्यवर्धन एवं विपणन
- ❖ अनुसूचित जाति महिलाओं एवं किशोरियों का उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण
- ❖ उन्नत कृषि तकनीकी से अनुसूचित जाति कृषकों का आर्थिक सशक्तिकरण

राज्य स्तरीय संगोष्ठी-

कृषक उत्पादक संगठन के कृषकों में मधुमक्खी पालन एवं शहद उत्पादन से उद्यमशीलता

दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट

भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी 13वीं पुण्यतिथि कार्यक्रम
26, 27 फरवरी 2023
दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट
स्थान : दीनदयाल परिसर, उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट
कार्यक्रम विवरण

Date	Time	Details of Activities			
26.02.2023	7:00 AM	*Manas Paath Subharambh (मानस पाठ शुभारम्भ)*			
	Venue	Lohia Sabhagaar 1 (Grounf Floor)	Lohia Sabhagaar 2 (First Floor)	*Vivekanand Sabhagaar*	*Vivekanand Sabhagaar*
	Inagural Session	SDG Conference		उन्नत कृषि तकनीकी से अनुसूचित जाति कृषकों का आर्थिक सशक्तिकरण एवं पोषक अनाज "श्रीअन्न"–रसायन मुक्त प्राकृतिक उत्पादन, मूल्यवर्धन एवं विपणन	उत्पादक संगठनों के कृषकों में शहद उत्पादन एवं मधुमक्खी पालन से उद्यमशीलता
		SDG 1 (No Poverty)	SDG 3(Good health and Well Being)		
26.02.2023	9:30 AM to 11:00 AM	• Child Poverty Reduction and Child Rights - A National Perspective			
		• Limitations of focusing on Income Poverty.	• Key lessons from Covid and the challenges going forward.		
		• Ending Poverty in all its Dimensions - Perspectives for Girl Children	• Key lessons from Covid and the challenges going forward.		
26.02.2023	11:00 AM to 11:30 AM	Tea Break			
		Lohia Sabhagaar 1 (Grounf Floor)	Lohia Sabhagaar 2 (First Floor)	Vivekanand Sabhagaar	Baal Kalan Bhawan
26.02.2023	11:30 AM 01:00 PM	• Ensuring Social Security in context of Economic Reforms.	• New Issues in Public Health	प्रशिक्षण सह: कार्यशाला का उद्देश	कृषि उत्पाद से रोजगार के अवसर एवं क्षेत्र
		• PMJKY	• Antimicrobial Resistance	पोषण अनाज उत्पादन तकनीकी	शहद उत्पादन की संभावनाए
		• Digital Architecture for Social Security in India.	• "Millets as nutri-cereals - perspectives for public health"	पोषक अनाज मूल्यवर्धन एवं विपणन	
				अनुसूचित जाति कृषको के आर्थिक सशक्तिकरण में पोषक अनाजों की भूमिका	
26.02.2023	1:00 PM 02:00 PM	Lunch			
				अनुसूचित जनजाति महिलाओं एवं किशोरियों का उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण	
26.02.2023	02:30 PM 04:00 PM	• Universalisation of Water and Sanitation (Swacch Bharat)	• Achieving Universal Health Coverage.	सी.एफ.एल. परियोजना की जानकारी	कृषक उत्पादक संगठन में उत्पादों का चयन एवं मूल्य वर्धन
		• Natural Resource Protection and Resilience - Global Perspectives	• Human Resource In Healthcare - A Public Health Perspective	बुन्देलखण्ड क्षेत्र के महत्वपूर्ण फल	मधुमक्खियों का जीवन एवं पालन स्थल चयन
		• Resilient Infrastructure.	• Integrating Health Systems: A Practical Approach.	हमारे उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण में फलों का महत्व	कृषक उत्पादक संगठन में व्यवसायिक प्रबंधन
		• "Climate resilience in agriculture- imperative for a Millet Revolution"		शरीर की रोग रोधी क्षमता बढ़ाने में फल एवं सब्जियों की भूमिका	मधु उत्पादन के प्रयोगात्मक यंत्र परिचय
	04:00 PM 04:30 PM	Tea Break			
26.02.2023	04:30 PM 06:00 PM	Joint Session for Drafting Conclusions and Discussion			
27.02.2022	7:00 AM	*Manas Paath Samapan and Hawan (मानस पाठ समापन एवं हवन)*			
	09:30 AM 12:30 PM	Plenary Session : (*Vivekanand Sabhagar*)			
	11:00 AM	*Santo Ki Pangat(संतों की पंगत)*			
	12:30 PM to	*Bhandara Prasad (भण्डारा प्रसाद)*			

द्वितीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-1 नो पावर्टी एवं एसडीजी-3 अच्छा स्वास्थ्य एवं जीवन स्तर

प्रथम दिवस 26 फरवरी-

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-1 नो पावर्टी एवं एसडीजी-3 अच्छा स्वास्थ्य एवं जीवन स्तर पर चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित द्वितीय अंर्तराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ 26 फरवरी, 2023 रविवार को दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार में राष्ट्रीय बाल अधिकार एवं संरक्षण आयोग के चेयरमैन श्री प्रियंक कानूनगो, ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भरत मिश्रा, पद्मश्री श्री उमाशंकर पांडेय तथा दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन, सेमिनार के संयोजक श्री वसंत पंडित द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। सेमिनार के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए ***सेमिनार के संयोजक श्री वसंत पंडित*** ने बताया कि 1968 में भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) ने चित्रकूट में पानी की कमी, आदिवासी बहुल और दूरदराज के इलाकों में संघर्ष मुक्त और आत्मनिर्भर गांवों के लिए अपने दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया है। संस्थान की परियोजनाएं और उसके कार्य विशेष रूप से कृषि, जलवायु अनुकूल कृषि-वानिकी, आय सृजन और वित्तीय स्थिरता, जल और स्वच्छता, स्वास्थ्य और ज्ञान सह-निर्माण पर केंद्रित हैं और इन्हें बीड व गोंडा में सक्रिय रूप से दोहराया जा रहा है।

एसडीजी-1 "गरीबी की पूर्णतः समाप्ति"

तकनीकी सत्र एसडीजी-1 के लक्ष्य ''गरीबी की पूर्णतः समाप्ति'' में प्रो. रामास्वामी सुदर्शन- कार्यकारी निदेशक सेंटर फार ग्लोबल गवर्नेंस एंड पालिसी ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, मिस ह्यून ही बान - चीफ आफ सोशल पालिसी यूनिसेफ इंडिया, सुश्री पारुल सोनी-ग्लोबल मैनेजिंग डायरेक्टर थिंक थ्रू कंसल्टिंग, श्री तेजिंदर सिंह संधू-एक्स यूनिसेफ एडवाइजर कलिंगा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेस, लेफ्टिनेंट कर्नल श्री प्रशांत कुमार सिंह-डीडीजी, यू.आई.डी एआई, डॉ. चंद्रमोहन मिश्रा- सीनियर रिसर्च एसोसिएट इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट लखनऊ, डॉ. राजीव ठाकुर- इंटरनेशनल रिसर्च एडवाइजर एट द यूनाइटेड स्टेट एजेंसी फार इंटरनेशनल डेवलपमेंट आदि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों व वक्ताओं ने राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में बाल गरीबी में कमी और बाल अधिकार, आय में गरीबी पर ध्यान केंद्रित करने की सीमाएं। गरीबी को उसके सभी आयामों में समाप्त करना विशेषकर बालिकाओं के लिए दृष्टिकोण, आर्थिक सुधारों के संदर्भ में सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना। पीएमजेकेवाई व भारत में सामाजिक सुरक्षा के लिए डिजिटल आर्किटेक्चर। जल और स्वच्छता का सार्वभौमिकरण (स्वच्छ भारत), प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और लचीलापन - वैश्विक दृष्टिकोण लचीला बुनियादी ढांचा। ''कृषि में जलवायु लचीलापन- बाजरा क्रांति के लिए अनिवार्य'' आदि प्रमुख विषयों पर अपना प्रस्तुतीकरण किया।

छायाचित्र – एसडीजी–1
'गरीबी की पूर्णतः समाप्ति'

एसडीजी –3 "अच्छा स्वास्थ्य और जीवनस्तर"

एसडीजी -3 ''अच्छा स्वास्थ्य और जीवनस्तर'' सत्र में डॉ. संजय माहेश्वरी, मेडिकल डायरेक्टर एमपी बिरला ग्रुप आफ हास्पिटल सतना, डॉ. सतीष कुमार-प्रोफेसर आईआईएचएमआर दिल्ली, डॉ. सूरज कुमार-एडवाइजर एंड चीफ मेंटर, कलिंगा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज, श्री समीर शर्मा एग्जीक्यूटिव टू द चीफ मिनिस्टर आफ आंध्र प्रदेश, डॉ. तापस चकमा-साइंटिस्ट जी नेशनल इंस्टीट्यूट आफ रिसर्च इन ट्राईबल हेल्थ, डॉ. संजीव बहेरा- हेड आईईसी डिविजन अफ्रीकन एषियन रूरल डेवलपमेंट आर्गेनाइजेशन आदि स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने अपने अनुभवों को साझा किया।

सम्मेलन का संयोजन करते हुए डॉ. मिलिन्द देवगांवकर, मेडिकल डायरेक्टर, आरोग्यधाम ने कहा कि हम सारे लोग एक ही आत्मा हैं, अगर एक को तकलीफ होती है तो दूसरा उससे अछूता नहीं है। समाज के लोगों को जीवन शैली बदलनी चाहिये ताकि बीमारी न हो। आयुर्वेद की दवाओं पर रिसर्च हो और एलोपैथ के साथ जोड़कर उनका उपयोग हो। टेली मेडिसिन को बढ़ावा मिले। रूरल कोपरेटिव हेल्थ इंश्योरेंस को विकसित करना चाहिये। सभी को इलाज की समुचित व्यवस्था मिले, ऐसा प्रयास हो।

दीनदयाल शोध संस्थान के ग्राम स्वावलंबन अभियान में लगी समाज शिल्पी दम्पत्ति प्रभारी श्रीमती सीमा पांडे, श्रीमती छाया चतुर्वेदी ने प्राचीन ग्रामीण पोषण पद्धति के बारे में बताया तथा संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए कहा कि किशोरी मण्डल एवं महिला मण्डल के सहयोग से दीनदयाल शोध संस्थान धार्मिक कार्यक्रमों व संस्कार गतिविधियों के माध्यम से अंधविश्वास और पोषक अनाजों के प्रति जागरुकता की दिशा में कार्य कर रहा है जो समाज में चेतना जागृत कर उन्हें आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

छायाचित्र

एसडीजी -3
"अच्छा स्वास्थ्य और जीवनस्तर"

द्वितीय दिवस 27 फरवरी-2023

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-1 नो पावर्टी एवं एसडीजी-3 अच्छा स्वास्थ्य एवं जीवन स्तर पर चित्रकूट में आयोजित द्वितीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन 27 फरवरी, 2023 सोमवार को समसामयिक अनुशंसाओं के साथ संपन्न हुआ। राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की 13वीं पुण्यतिथि पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विमर्श के दौरान प्राप्त सुझावों को संकलित कर यूनाइटेड नेशन एजेंसियों, केंद्र सरकार, राज्य सरकारों एवं सतत विकास लक्ष्यों के व्यावहारिक कार्य में लगी संस्थाओं और शोध संस्थाओं को क्रियान्वयन के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। इस दौरान इस विषय पर आम सहमति बनी कि अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का डॉक्यूमेंट भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रियों सहित केंद्र एवं राज्य सरकार के सचिवों को भी उपलब्ध कराए जाने का निर्णय लिया गया।

समापन नार्वे के पूर्व पर्यावरण एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास मंत्री एरिक सोलहींम के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री वीरेंद्रजीत सिंह, सतना सांसद श्री गणेश सिंह, संघ के प्रचारक श्री गोरेलाल जी, पूर्व कुलपति प्रोफेसर नरेश चंद गौतम, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्रा, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति डॉ. अरविंद शुक्ला, ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भरत मिश्रा, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के डॉ. वीके जैन, बांदा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एन.पी. सिंह, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय इंफाल के कुलपति डॉ. अनुपम मिश्रा, संघ के प्रचारक श्री शेषाद्री चारी जी, राज ग्रामीण विकास संस्थान जबलपुर के निर्देशक श्री संजय सराफ, पद्मश्री श्री उमाशंकर पांडेय प्रमुख रूप से मंचासीन रहे।

सम्मेलन के समापन सत्र में ''वर्ल्ड एसडीजी फोरम'' की भी लांचिंग की गई। एक ऐसा प्लेटफार्म जिसमें सब इकट्ठा हो सकें और अपनी बात रख सकें। वर्ष 2030 तक एसडीजी पर काम चलेगा। इससे वर्ल्ड एसडीजी फोरम को स्थाई रूप प्रदान करने में सहयोग मिलेगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ग्लोबल फोरम तैयार किया गया है। जिसमें ग्रामोदय से सर्वोदय और लोकल टू ग्लोबल भाव के साथ जो सोच नाना जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की रही उसी सोच के अनुरूप वर्ल्ड एसडीजी फोरम की स्थापना की गई है।

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन ने कहा कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) के 17 बिंदु है। सतत विकास को लेकर यह आयोजन चित्रकूट में हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 17 बिंदुओं को लेकर वर्ष 2015 से 2030 तक के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सतत विकास के इन 17 लक्ष्यों में से एसडीजी 1 एवं 3 पर यहाँ चिंतन हुआ है। आगे भी कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें करना है।

एरिक सोलहींम पूर्व पर्यावरण मंत्री नार्वे ने कहा कि चित्रकूट की पावन भूमि पर आप सबके बीच आकर बहुत अच्छा लग रहा है। इस अलौकिक भूमि का अपना अलग ही महत्व है। चित्रकूट में ग्रामीण विकास के लिए नाना जी ने जो माडल प्रस्तुत किए हैं, वह अनुकरणीय है। सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तीन प्रमुख आयाम है उन सभी पर कार्य किया जा रहा है उन पर और भी कार्य करने की आवश्यकता है। *किसी भी देश के सर्वांगीण एवं स्थाई सतत विकास के लिए एक मजबूत एवं सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता होती है जो आज भारत देश को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के रूप में प्राप्त हो रहा है। जिससे भारत का तीव्र गति से विकास हो रहा है। यहाँ यह भी आवश्यक है कि विकास के क्रम में हम अपनी पुरातन संस्कृति और सभ्यता को नहीं छोड़े क्योंकि वही हमारी वास्तविक पहचान है। भारत के वसुधैव कुटुम्बकम को यदि सभी देश अपने साथ आत्मसात कर ले तो स्थाई सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में आसानी होगी।* भारत मोदी जी के नेतृत्व में अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और सतत विकास के तीनों आयामों के साथ शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ बुनियादी ढांचागत विकास में तरक्की कर रहा है। अर्थव्यवस्था में भारत देश की स्थिति सुदृढ़ है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी सशक्त नेतृत्व की सरकार काम कर रही हैं जिससे यहां पर भी तीव्र गति से विकास हो रहे हैं। समाज के सभी बुद्धिजीवियों एवं विश्व के सभी देशों को एकमत

होकर सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सकारात्मक सहयोग प्रदान करके समयबद्ध रूप से पहल कर उसे प्राप्त करना होगा।

सम्मेलन के **संयोजक श्री वसंत पंडित** ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सतत विकास लक्ष्यों में एकात्म मानव दर्शन का बोध होता है। सत्र का संयोजन करते हुए डीआरआई के महाप्रबंधक श्री अमिताभ वशिष्ठ ने बताया कि जी 20 अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, भारत का उद्देश्य ''वसुधैव कुटुम्बकम'' (एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य) के सिद्धांत को उजागर करते हुए एक साझा भविष्य के साथ-साथ समान और समावेशी विकास के एजेंडे को पेश करना है। ''स्थायी विकास'' की अवधारणा तीन अन्योन्याश्रित और पारस्परिक रूप से मजबूत स्तंभों पर निर्भर है। आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण। कार्यों को निधि, प्रबंधन और निगरानी करने की क्षमता और क्षमता में मौजूदा असमानता प्रमुख बाधाएँ हैं। इस प्रकार, विकसित और विकासशील दोनों देशों द्वारा परिवर्तनकारी नीतियों के माध्यम से सामूहिक और व्यक्तिगत कार्रवाई का संयोजन आवश्यक है। एसडीजी को प्राप्त करने में अपने प्रयासों के प्रमुख एजेंडे के रूप में मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास को बढ़ावा देने के लिए जी20 वैश्विक व्यवस्था को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाने के लिए बेंचमार्क के रूप में कार्य कर सकता है।

'सर्वसम्मति से ''चित्रकूट डिक्लेरेशन'' पारित'

26-27 फरवरी 2023 को दीनदयाल परिसर, चित्रकूट में आयोजित दूसरे अंतर्राष्ट्रीय एसडीजी सम्मेलन में सर्वसम्मति से निम्नलिखित ''चित्रकूट घोषणा'' पारित किया गया।

1. **एसडीजी को साकार करने के अनुभव और प्रयोगों से सीखने की आवश्यकता को महसूस करने के बाद, यह सम्मेलन 2030 तक प्रत्येक वर्ष इस तरह की एक अंतरराष्ट्रीय सभा आयोजित करने के निर्णय का समर्थन करता है।**
2. **एसडीजी के निर्धारण में नागरिक समाज को पर्याप्त स्थान देने के बाद, अब इसमें शामिल होने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना आवश्यक है जिससे निगरानी एवम कार्यान्वयन उनकी सहभागिता सुनिश्चित की जा सके।**
3. **सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में वर्तमान वैष्विक आर्थिक बायनेरिज की अपर्याप्तता को महसूस करते हुए, भारत और वैश्विक के लिए एक नई और समावेशी विश्व आर्थिक व्यवस्था के लिए प्रयास शुरू करना अनिवार्य है, जो एसडीजी को पूरा करने की प्रक्रिया को तेज करेगा।**
4. **चित्रकूट में विशेष रूप से दीनदयाल शोध संस्थान जैसे संस्थानों के अनुभवों और प्रयोगों को समाहित करते हुए, 'स्थानीय से वैष्विक' की भावना में समाधान के आधार के रूप में परिवार पर जोर देते हुए एक नए आख्यान पर ध्यान देना प्रासंगिक होगा। - ग्रामोदय से सर्वोदय (ब्रह्मांड से गांव) या ग्राम से वैश्विक तक, इस प्रकार विश्व एसडीजी फोरम अंततः सभी के लिए एक वैश्विक मंच में बदल जाएगा, जिसमें प्रत्येक हितधारक एक भागीदार और लाभार्थी के रूप में होगा।**

सत्र के अंत में दीनदयाल शोध संस्थान के **राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी** ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि नाना जी की प्रेरणा से उन्हीं की भावनाओं के अनुरूप जनता की पहल और पुरुषार्थ के अनुपम उदाहरण के तौर पर इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया है। उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला।

चित्रकूट में संपन्न हुए द्वितीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की खासियत यह रही कि इस तरह का यह पहला मंच रहा जिसमें यूएन के सतत् विकास के गोल्स 1 एवं 3 के अंतर्गत अनुकरणीय, मापनीय, धारणीय नमूनों पर सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों सहित विभिन्न देशों में इन लक्ष्यों पर काम कर रहे अनुभवी विशेषज्ञों के बीच विचार-विनिमय हुआ, तथा ऐसे समाधानों एवं हस्तक्षेपों के सर्वोत्तम प्रारूप विकसित करने की दिशा में यह सम्मेलन कारगर साबित होगा। जो स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर समान रूप से अनुपालन योग्य है।

छायाचित्र - समापन सत्र एसडीजीः 1 एवं 3

कृषक कार्यशाला एवं पोषक अनाज प्रदर्शनी– 26-27 फरवरी 2023

9.00–10.00 बजे तक – पंजीयन

10.00–11.00 बजे तक – उद्घाटन एवं उद्बोधन

11.00–11.30 बजे तक – अतिथियों द्वारा पोषक अनाज प्रदर्शनी का उदघाटन एवं अवलोकन

तकनीकी सत्र–I

11.30–01.30 बजे तक – प्रशिक्षण सह कार्यशाला–उन्नत कृषि तकनीकी से अनुसूचित जाति कृषकों का आर्थिक सशक्तिकरण

तकनीकी सत्र–II

प्रशिक्षण सह कार्यशाला–**पोषक अनाज श्री अन्न–रसायन मुक्त प्राकृतिक उत्पादन, (मूल्यवर्धन एवं विपणन)**

1.30–2.30 बजे तक –भोजन

तकनीकी सत्र–III

2.30–4.30 बजे तक –प्रशिक्षण सह कार्यशाला–अनुसूचित जनजाति महिलाओं एवं किशोरियों का उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण

तकनीकी सत्र–I (प्रशिक्षण सह कार्यशाला–उन्नत कृषि तकनिकी से अनुसूचित जाति कृषकों का आर्थिक सशक्तिकरण)

तकनीकी सत्र–II (प्रशिक्षण सह कार्यशाला–पोषक अनाज श्री अन्न–रसायन मुक्त प्राकृतिक उत्पादन, मूल्यवर्धन एवं विपणन)

संचालन–डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी/श्री अखिलेश जागरे

मंचासीन अथिति–डॉ. एस.आर.के. सिंह, डॉ. शालिनी गौर, डॉ. आर. रॉय बर्मन, डा. अमित गोस्वामी

अध्यक्षता–श्री अभय महाजन, मा. संगठन सचिव, दीनदयाल शोध संस्थान

समय	विवरण	वक्ता
11:30 से 1:30 बजे पूर्वान्ह	कार्यशाला का उद्देश्य	डॉ. अमित गोस्वामी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली
	पोषण अनाज उत्पादन तकनीकी	डॉ. आर. रॉय बर्मन, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली
	पोषक अनाज मूल्यवर्धन एवं विपणन	डॉ. शालिनी गौर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान,नई दिल्ली
	अनुसूचित जाति कृषकों के आर्थिक सशक्तिकरण में पोषक अनाजों की भूमिका	डॉ. एस.आर.के. सिंह, निदेशक कृषि तकनीकी अनुसंधान एवं शोध संस्थान, जबलपुर

तकनीकी सत्र–III–प्रशिक्षण सह कार्यशाला **अनुसूचित जनजाति महिलाओं एवं किशोरियों का उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण**

संचालन–डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी

मंचासीन अथिति–डॉ. प्रेम माथुर, डॉ. शैलेन्द्र राजन, डॉ. टी.आर. शर्मा, श्री नारायण सिंह कुशवाहा, डॉ. सारिका

अध्यक्षता–श्री अभय महाजन, मा. संगठन सचिव, दीनदयाल शोध संस्थान

समय	विवरण	वक्ता
2:30 से 4:30 बजे अपरान्ह	सी.एफ.एल परियोजना की जानकारी	डॉ. सारिका
	बुन्देलखण्ड क्षेत्र के महत्वपूर्ण फल	डॉ. टी.आर. शर्मा, प्राध्यापक, जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर
	हमारे उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण में फलों का महत्व	डा. शैलेन्द्र राजन, पूर्व निदेशक, केन्द्रीय उपोषण बागवानी अनुसंधान संस्थान, लखनऊ
	शरीर की रोग रोधी क्षमता बढ़ाने में फल एवं सब्जियों की भूमिका	डा. प्रेम माथुर, बायोवर्सिटी इंटरनेशनल, नई दिल्ली

'पोषक अनाज "श्री अन्न" एवं किशोरियों के उत्तम स्वास्थ्य पर चित्रकूट में हुआ मुक्त चिंतन'

भारत रत्न राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की 13वीं पुण्यतिथि के अवसर पर चित्रकूट के दीनदयाल परिसर में *कृषक कार्यशाला एवं पोषक अनाज प्रदर्शनी का शुभारंभ 26 फरवरी, 2023 रविवार को कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री मध्य प्रदेश शासन श्री कमल पटेल एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री रामखेलावन पटेल, पदमश्री जल योद्धा श्री उमा शंकर पांडेय, सांसद सतना श्री गणेश सिंह, सांसद खंडवा श्री ज्ञानेश्वर पाटिल, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक डॉ. यूएस गौतम, डॉ. एके सिंह, डॉ. प्रभात कुमार, सतना कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा, डॉ. एसआरके सिंह डायरेक्टर अटारी जबलपुर, डॉ. शांतनु दुबे डायरेक्टर अटारी कानपुर, डॉ. सारिका मिश्रा बायोवर्सिटी इंटरनेशनल* द्वारा राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

इस अवसर पर श्री रामखेलावन पटेल मंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ प्रकृति एवं पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन करते हुए कैसे हम जल, जंगल, जमीन और जानवरों का संरक्षण एवं सम्वर्धन कर सकते हैं, यह आज सभी के लिए महत्वपूर्ण विषय है। जिस पर दीनदयाल शोध संस्थान का चिंतन, विचार-विमर्श सदैव महत्वपूर्ण रहता है। आज गेहूं, चावल सस्ते हैं परंतु मोटे अनाज महंगे और यह हमारे स्वास्थ्य के लिए अति महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक खेती आज की महती आवश्यकता है क्योंकि रासायनिक खाद एवं उर्वरकों से तथा आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम अपने प्राकृतिक संपदाओं को नष्ट कर रहे हैं। जिससे विभिन्न प्रकार की समस्याएं आज खड़ी होती जा रही है। इन सभी समस्याओं का समाधान प्राकृतिक जैविक खेती है हमे इसकी ओर पुनः लौटना होगा।

श्री कमल पटेल कृषि मंत्री मध्य प्रदेश शासन ने अपने उद्बोधन में कहा कि अपने लिए तो सब जीते हैं परंतु दूसरों के लिए जीना श्रेष्ठ है। यह हम सबको सिखाने वाले हम सबके पथ प्रदर्शक, प्रेरणा स्रोत भारत माता के सच्चे सपूत राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख को शत शत नमन एवं वंदन। देश के वनवासी बंधु भगनियों ने ही हमारी वन संपदा, जंगल, जमीन, जानवरों तथा जल का संरक्षण एवं संवर्धन किया है। जिसके कारण हमारा पर्यावरण एवं प्रकृति बची हुई है। वनवासी बंधु भगिनी सच्चे अर्थों में हमारी इस पृथ्वी के संरक्षक हैं। मानव निर्मित जहरीला वातावरण आज पूरे विश्व की समस्या है। प्रकृति, पर्यावरण, जीवन, मिट्टी की रक्षा करना हम सभी को वनवासी बंधुओं से सीखना चाहिए। मोटे अनाज से ही आजीवन स्वास्थ्य की कल्पना को साकार किया जा सकता है इसीलिए 2023 को मोटे अनाज वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने मोटे अनाज को "श्री अन्न" के रूप में परिभाषित किया है।

इस मौके पर श्री उमा शंकर पांडे जखनी पद्मश्री ने कहा कि कठिन परिस्थितियों में नानाजी ने कार्य प्रारंभ किया और वह सदैव कहते थे खेत पर मेड़ और मेड़ पर पेड़, बुंदेलखंड पिछड़ा क्षेत्र है जहां पहले मालगाड़ी से पानी आता था परंतु नाना जी के द्वारा किए गए प्रयासों से अब मालगाड़ी से धान जा रहा है। कितना कठिन भागीरथ प्रयास किया होगा उन्होंने कि जहां खाने के लिए अनाज नहीं होता था आज वहां बासमती जैसे धान 25 लाख कुंतल सरकार द्वारा खरीदा जा रहा है। जिसे भूखा बुंदेलखंड कहा जाता था आज 80000 किसानों ने मेडबंदी की है। जल का संरक्षण किया है। नानाजी युगपुरुष थे वह सच्चे भारत रत्न थे, वह दूर दृष्टा थे नानाजी सर्वस्पर्शी तथा सभी के साथ समभाव रखते थे। उन्होंने कहा कि सम्मान तो आते जाते रहते हैं बड़ी बात नहीं है बड़ी बात व्यक्ति की पहचान है। यह जल नहीं जगदीश है, जल की एक एक बूंद को संरक्षित करना होगा तभी हमारी पृथ्वी, प्रकृति, पर्यावरण कृषि और हम सभी सुरक्षित रह पाएंगे। उन्होंने पद्मश्री सम्मान को नाना जी के चरणों मे समर्पित किया।

कार्यक्रम की रूपरेखा रखते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन ने कहा कि नानाजी सदैव नवाचार पर विश्वास करते थे, वे सदैव पंचमहाभूत के माध्यम से पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन की कल्पना करते थे, नानाजी प्रयोगधर्मी थे।

उन्नत कृषि तकनीक से अनुसूचित जाति कृषकों का आर्थिक सशक्तिकरण के लिए प्रशिक्षण सह कार्यशाला

उन्नत कृषि तकनीक से अनुसूचित जाति कृषकों का आर्थिक सशक्तिकरण व पोषक अनाज ''श्री अन्न'' - रसायन मुक्त प्राकृतिक उत्पादन, मूल्यवर्धन एवं विपणन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. प्रभात कुमार बागवानी आयुक्त भारत सरकार, डॉ. एस आर के सिंह निदेशक कृषि तकनीकी अनुसंधान संस्थान जबलपुर, डॉ. जे.पी. शर्मा पूर्व कुलपति शेरे कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय जम्मू, डॉ. एसएस तोमर अधिष्ठाता कृषि संकाय ए.के.एस. विश्वविद्यालय सतना, डॉ. नरेंद्र सिंह प्राध्यापक बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बांदा, डॉ. अमित गोस्वामी वरिष्ठ वैज्ञानिक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, डॉ. शांतनु दूबे, डॉ. चवलेश कुमार वैज्ञानिक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, डॉ. अनुपम मिश्रा कुलपति केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल आदि वक्ताओं ने पोषक अनाज उत्पादन तकनीकी, मूल्यवर्धन एवं विपणन तथा अनुसूचित जाति कृषकों के आर्थिक सशक्तिकरण में पोषक अनाजों की भूमिका विषय पर अपने विचार व अनुभव रखे।

अनुसूचित जनजाति महिलाओं एवं किशोरियों का उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषक विषयक संगोष्ठी

दीनदयाल परिसर के विवेकानंद सभागार में अनुसूचित जनजाति महिलाओं एवं किशोरियों का उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषक विषयक प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. सारिका बायोवर्सिटी इंटरनेशनल नई दिल्ली, डॉ. अभिषेक सिंह विभाग प्रमुख उद्यानिकी ए.के.एस. विश्वविद्यालय सतना, डॉ. टी आर शर्मा प्राध्यापक जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर, डॉ. ए.के. श्रीवास्तव प्राध्यापक बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बांदा, डॉ. यू एस गौतम उप महानिदेशक आईसीएआर ने सी.एफ.एल. परियोजना की जानकारी, उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण में फलों का महत्व, बुंदेलखंड क्षेत्र के महत्वपूर्ण फल, शरीर की रोग रोधी क्षमता बढ़ाने में फल व सब्जियों की भूमिका विषय पर देश भर से आए ख्याति प्राप्त विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे। इस प्रशिक्षण सह कार्यशाला की अध्यक्षता श्री अमिताभ वशिष्ठ महाप्रबंधक दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा की गई। कार्यशाला का संचालन केवीके के वैज्ञानिक श्री अखिलेश जागरे द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन केवीके मझगवां के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. आर एस नेगी द्वारा किया।

छायाचित्र

कृषक कार्यशाला
एवं
पोषक अनाज
प्रदर्शनी

कृषक उत्पादक संगठन से जुड़े कृषकों में मधुमक्खी पालन एवं शहद उत्पादन उद्यमशीलता

दिनांक 26–27 फरवरी, 2023

विषयवार सत्र–

- कृषक उत्पादक संगठन में व्यवसाय प्रक्रिया प्रबंधन
- व्यवसायों का कानूनी और अनुपालन पहलू
- कृषक उत्पादक संगठन में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार निर्यात आयात
- पहचान एवं कृषि वस्तुओं का मूल्य वर्धन का मानचित्रण
- कृषक उत्पादन संगठन में व्यापार के अवसर एवं क्षेत्र
- कृषक उत्पादक संगठन में घटकों निदेशक, कार्यपालन अधिकारी, लेखापाल एवं कृषकों के कार्य
- कृषक उत्पादक संगठन में ऋण एवं वित्तीय सहयोग

विषय विशेषज्ञ–

- डॉ. प्रभात कुमार, मा. आयुक्त उद्यानिकी, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली
- डॉ. रमेश मित्तल जी, निदेशक, राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान, जयपुर
- डॉ. रंजीत राजपूत, उप निदेशक, लघु कृषक, कृषि व्यापार संघ, नई दिल्ली
- श्री निर्भय झा जी, अधिकारपत्रप्राप्त लेखाकार (चार्टर्ड एकाउंटेंट)
- श्री सुमित अग्रवाल जी अधिकारपत्रप्राप्त लेखाकार (चार्टर्ड एकाउंटेंट)
- श्री अरुन्देंद्र प्रताप सिंह, प्रबंधक जिला अग्रणी बैंक

प्रतिनिधि नाबार्ड–

- प्रतिनिधि जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
- प्रतिनिधि राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर
- प्रतिनिधि, ए. के. एस. विश्वविद्यालय सतना
- श्री विवेक चतुर्वेदी जी टीकमगढ
- श्री मनोज पटेल जी दमोह
- श्री राज सिंह कुशवाहा जी ग्वालियर द्वारा कृषक संगठन प्रतिनिधि
- विषय विशेषज्ञ, खाद्य प्रसंस्करण

कृषक उत्पादक संगठन से जुडे कृषकों में
''मधुमक्खी पालन एवं शहद उत्पादन से उद्यमशीलता''

दो दिवसीय राज्य स्तरीय संगोष्ठी कृषक उत्पादक संगठन से जुडे कृषकों में ''मधुमक्खी पालन एवं शहद उत्पादन से उद्यमशीलता'' संगोष्ठी का उद्‌घाटन उपरान्त सत्र प्रारम्भ हुआ।

प्रथम सत्र में वक्ता के रूप में **डा. रंजीत राजपूत, एसएफएसी नई दिल्ली** द्वारा कृषि उत्पाद से रोजगार के अवसर एवं क्षेत्र विषय पर किसानां को एफपीओ के उद्देश्यों एवं सरकार द्वारा अनुदान पर विस्तृत जानकारी दी। इस सत्र की अध्यक्षता डा. प्रभात कुमार, आयुक्त उद्यानिकी, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा की गई जिसमें उन्होंने किसानों को व्यवसायी के रूप में कार्य करने के लिए कहा तथा जलवायु अनुसार खेती करने पर जोर दिया।

द्वितीय सत्र में वक्ता के रूप में **श्रीमती पंक्ति नायक, एनडीडीबी, आनन्द, गुजरात** द्वारा शहद उत्पादन की संभावनाओं विषय पर जानकारी दी जिसमें मीठी क्रांति पर जोर देते हुए खेती के साथ मधुमक्खी पालन से होने वाले लाभ के बारे में विस्तृत रूप से किसानों को जानकारी दी। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. शान्तनु कुमार दुबे, निदेशक, अटारी, कानपुर द्वारा की गई। मा. अध्यक्ष द्वारा किसानों को समूह आधारित व्यवसाय एवं खाद्य प्रसंस्करण के बारे में जानकारी दी।

तृतीय सत्र में वक्ता के रूप में **डा. मोनी थामस, निदेशक, कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान** द्वारा कृषक उत्पादक संगठन में उत्पादों का चयन एवं मूल्यवर्धन विषय पर जानकारी दी जिसमें उन्होंने किसानों को बताया कि कृषि को व्यवसाय के रूप में देखना चाहिए तथा किसानों को गरीबी की मानसिकता समाप्त कर व्यापारी बनना चाहिए। इस सत्र की अध्यक्षता श्री अमिताभ वशिष्ठ, महाप्रबन्धक, दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा की गई।

चतुर्थ सत्र में वक्ता के रूप मे **डा. एके भौमिक, विषय विशेषज्ञ, कीट विज्ञान** द्वारा मधुमक्खियों का जीवन एवं पालन स्थल चयन विषय पर जानकारी दी जिसमें उन्होंने बताया कि मधुमक्खी एक मात्र मनुश्य की मित्र कीट है जो खाद्य उपलब्ध करवाती है तथा मधुमक्खी से प्राप्त अवयवों में शहद का उपयोग दवाईयों में, मोम का सौदर्य प्रसाधन में, रायल जेली का उपयोग शक्तिवर्धक दवाओं मे प्रयोग होता है। इस सत्र की अध्यक्षता डा. आशीष पाण्डेय, प्राध्यापक, आईआईटी, रूढकी द्वारा की गई।

पंचम सत्र में वक्ता के रूप में **डा. वाईपी सिंह, निदेशक, विस्तार सेवाएं** द्वारा शहद उत्पादन एवं मधुमक्खी पालन से उद्यमशीलता विषय पर विस्तृत जानकारी दी जिसमें उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन के ज्ञान विज्ञान को समझना आवश्यक है और यह रोजगार का अच्छा साधन है। इस सत्र की अध्यक्षता मा. निखिल मुण्डले, उपाध्यक्ष, दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा की गई।

छठा सत्र में शहद **उद्यमी दमोह श्री मनोज पटेल** द्वारा मधु उत्पादन के प्रयोगात्मक यंत्र परिचय किसानों को कराया गया तथा एफपीओं सदस्यों को मधुमक्खी पालन मे आने वाली जटिलताओं के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इस व्यवसाय को करने से पूर्व विशेषज्ञों से प्रशिक्षण प्राप्त करने एवं किसी मधुमक्खी पालक के साथ लगभग एक वर्ष तक जानकारी लेना बहुत आवश्यक है। दूसरे शहद उद्यमी श्री यशपाल कुशवाहा द्वारा मधुमक्खी पालन में अपने अनुभवों को कृषको से साझा किया। इस सत्र की अध्यक्षता डा. अरविन्द शुक्ला, मा. कुलपति, रा.वि.सि.विवि.ग्वालियर द्वारा की गई तथा मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजेश जी महाजन, सचिव, दी.शो.सं. उपस्थित रहे तथा उन्होंने कृषकों से इस संगोष्ठी की उपयोगिता एवं महत्व के बारे मे चर्चा की।

सातवें सत्र में वक्ता के रूप में **डा. मनोज अहिरवार, जेएनकेविवि, जबलपुर** द्वारा कृषि उत्पादन में मधुमक्खी पालन का महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई जिसमें उन्होंने बताया कि मधुमक्खियों द्वारा पर-परागण किया जाता है जिससे सरसों, अरहर, सूरजमुखी आदि फसलों के उत्पादन में वृद्धि होती है तथा गौ आधारित खेती पर जोर देने की बात कही। जिससे रासायनिक दवाओं के छिडकाव को कम किया जा सके जो कि मधुमक्खी पालन के लिए हानिकारक है। इस सत्र की अध्यक्षता डा. विक्रमा प्रसाद पाण्डेय, सदस्य, प्रबन्ध समिति, दी.शो.सं. एवं सत्र सह अध्यक्ष श्री रामकृष्ण तिवारी जी, प्रभारी, दी.शो.सं. गोण्डा।

आठवां सत्र में उद्यमिता परिसर में स्थापित विभिन्न इकाई का भ्रमण कराया गया ।

द्वितीय दिवस दिनांक 27.2.23 को नवें सत्र में वक्ता के रूप में **श्री सुमित अग्रवाल** द्वारा व्यवसायों में कानूनी और अनुपालन पहलू विषय पर एफपीओं सदस्यों को जानकारी दी जिसमें उन्होंने एफपीओं के निदेशको के दायित्वों, बैठकों एवं आयकर सम्बन्धी जानकारी विस्तृत रूप से दी। इस सत्र की अध्यक्षता डा. एस.के.एस. सिंह, निदेशक, अटारी, जबलपुर तथा मुख्य अतिथि के रूप में श्री इम्तियाज जी ने की।

दसवें सत्र में वक्ता के रूप में **डा. आईडी सिंह, प्रबन्धक, एनएससी कानपुर** द्वारा कृषि उत्पादों के व्सवसाय एवं वित्तीय सहयोग विषय पर किसानों को विस्तृत जानकारी दी। इस सत्र की भी अध्यक्षता डा. एस.के.एस. सिंह, निदेशक, अटारी, जबलपुर तथा मुख्य अतिथि के रूप में श्री इम्तियाज जी ने की जिसमें उन्होंने कृषकों से आहवान किया कि परम्परागत खेती को छोडकर आधुनिक खेती की ओर बढ़ने की आवश्यता है जिससे किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त हो सके। अध्यक्ष महोदय द्वारा एफपीओ के महत्व और उससे लाभ के बारे में किसानों को अवगत कराया।

नवाचार को साझा करने कलिंग विश्वविद्यालय उड़ीसा एवं बांदा कृषि विश्वविद्यालय का डीआरआई के साथ एमओयू

कलिंग विश्वविद्यालय उड़ीसा और बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बांदा के साथ 27 फरवरी, 2023 को चित्रकूट में नाना जी की पुण्यतिथि के अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के साथ एमओयू साइन हुआ। अब इन दोनों विश्वविद्यालय और दीनदयाल शोध संस्थान के बीच एकेडमिक, ट्रेंनिंग, रिसर्च एक्सटेंशन गतिविधियों के संचालन के लिए उनके पास उपलब्ध रिसोर्स एक्सचेंज के लिए एमओयू साइन हुआ है।इस अनुबंध के बाद कलिंग विश्वविद्यालय और बांदा कृषि विश्वविद्यालय एवं दीनदयाल शोध संस्थान शोध परियोजनाओं के निर्माण व संचालन में भी एक दूसरे का सहयोग करेंगे।

नानाजी देशमुख को श्रद्धांजलि के दौरान कलिंग विश्वविद्यालय के डॉ. सूरज कुमार व बांदा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एनपी सिंह तथा डीआरआई के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री अभय महाजन ने एमओयू साइन किया और परंपरा अनुसार दोनों संस्थाओं के प्रशासनिक मुखियों ने हस्ताक्षर युक्त अनुबंध की प्रति एक दूसरे को सहर्ष सौंपी। नानाजी के श्रद्धांजलि सभा में मौजूद सैकड़ों लोग इस पुनीत अवसर के साक्षी बने।

नानाजी की 13वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि के साथ हजारों लोगों ने किया प्रसाद ग्रहण

विविध क्षेत्रों से नानाजी के प्रति आस्था रखने वाले लोगों, जन प्रतिनिधियों ने चित्रकूट पहुंचकर नानाजी को दी श्रद्धांजलि

भारत रत्न नानाजी देशमुख के स्मृति चिन्ह के रूप में दीनदयाल परिसर चित्रकूट में श्रद्धा स्थल पर उनकी 13 वीं पुण्यतिथि 27 फरवरी को देश भर के विविध क्षेत्रों से समान उद्देश्य वाले कार्यकर्ताओं, जन प्रतिनिधियों एवं नानाजी के प्रति आस्था रखने वाले लोगों ने चित्रकूट पहुंच कर नानाजी के श्रद्धा स्थल पर पुश्पांजलि अर्पित की।

इनके अलावा संस्थान के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं और चित्रकूट क्षेत्र के लोगों द्वारा विधि-विधान पूर्वक श्रद्धा सुमन अर्पित किया। एक दिन पूर्व ही नानाजी को श्रद्धांजलि देने वाले क्षेत्रीय ग्रामीणों का तांता दीनदयाल परिसर में लगने लगा था। प्रातः से ही चित्रकूट क्षेत्र के ग्रामीण लोग आना शुरू हो गए और पंडित दीनदयाल पार्क में बने नानाजी के श्रद्धा स्थल पर पुष्पांजलि का दौर चलता रहा, वहीं दूसरी ओर श्रीरामचरितमानस पाठ का हवन पूजन कार्यक्रम में भी लोग अपनी आहुति पूर्ण कर रहे थे। दीनदयाल परिसर के ग्राउंड में भंडारा प्रसाद का कार्यक्रम प्रातः 10 बजे से साधु-संतों के प्रसाद से प्रारंभ होकर अनवरत देर शाम तक चलता रहा। जिसमें लगभग 22-24 हजार लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

एक मुट्ठी अनाज एवं एक रूपये के अंशदान से हुआ विशाल भंडारा

8976 परिवारों से 11 लाख रुपया का अंशदान तथा 75 क्विंटल अनाज का हुआ संकलन

व्यक्ति पुरुषार्थी, स्वावलम्बी तब बनता है जब उसका आत्मबल मजबूत होता है। आत्मविश्वास को मजबूती देने में आस्था का होना जरूरी है। ऐसी ही कुछ आस्था चित्रकूट क्षेत्र के ग्राम वासियों में भारत रत्न नानाजी देशमुख के लिए दिखी। नानाजी ने जिस तरह आम जनता की पहल और पुरुषार्थ से चित्रकूट में जो सामाजिक पुनर्रचना का काम खड़ा किया है उसमें प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी उन्होंने सुनिश्चित करने का प्रयास किया था, उसी भागीदारी को बरकरार रखने के लिए नानाजी की 13वीं पुण्यतिथि 27 फरवरी, 2023 को होने वाला विशाल भंडारा प्रसाद आम जनमानस के एक मुट्ठी अनाज एवं एक रुपये अंशदान सहयोग से संपन्न हुआ। जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं की टोली मझगवां एवं चित्रकूट जनपद के अधिकांश गांव एवं घरों तक पहुंची, पुण्यतिथि कार्यक्रम का आमंत्रण दिया और सहयोग की अपेक्षा की। इसमें संत समाज ने भी बढ़-चढ़कर भागीदारी की। हरेक गांव में आस्था के प्रति सहभागिता का नजारा देखने लायक था। जिसमें 8976 परिवारों से 11 लाख रुपया का अंशदान तथा 75 क्विंटल अनाज का संकलन हुआ।

सियाराम कुटीर में भी हुआ पुष्पार्चन

देशभर के कई स्थानों से नानाजी से जुड़े हुए तथा उनके कार्य के प्रति आस्था रखने वाले लोगों ने चित्रकूट आकर नानाजी के आवास सियाराम कुटीर में भी जाकर उनको श्रद्धा सुमन अर्पित किए। संत महंतों ने भी अपनी पूरी टोली के साथ सियाराम कुटीर आकर नानाजी के कक्ष में पहुंचकर उनको याद किया।

छायाचित्र–श्रद्धांजलि कार्यक्रम एवं भंडारा प्रसाद

कृषकों को प्राकृतिक खेती करने के लिए किया प्रेरित

मझगवां/कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा प्राकृतिक खेती परियोजना अंतर्गत विकासखंड स्तर पर रसायन मुक्त खेती पर कृषक कार्यशाला का आयोजन उचेहरा विकासखंड में किया गया, जिसमें कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश जागरे ने कृषकों को रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती के महत्व एवं वीजामृत, तरल जीवामृत, घन जीवामृत, जैव कीटनाशक (नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र एवं अग्नियास्त्र) कैसे बनाएं इस पर विस्तार से जानकारी दी।

कार्यशाला में उचहेरा विकास खंड के कृषकों द्वारा जैविक पद्धति से उत्पादित मूली एवं पालक का प्रदर्शन किया गया।

इस दौरान केवीके के वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया द्वारा कृषकों को एग्री ड्रोन तकनीकी के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा किसानों को बताया कि कैसे हम ड्रोन का उपयोग करके कम समय में अधिक क्षेत्र में दवाई का स्प्रे कर सकते हैं।

कार्यक्रम में कृषि विभाग सतना के उपसंचालक कृषि श्री राजेश त्रिपाठी ने कृषकों को प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रेरित किया और साथ ही सरकारी योजनाओं से किसानों को लाभान्वित करने का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ विकास अधिकारी श्री विजय कुमार त्रिपाठी ने सबका आभार व्यक्त किया एवं कार्यक्रम में वीरेंद्र कुमार प्रजापति आर्या परियोजना सहायक एवं उचेहरा विकासखंड के ग्रामीण विस्तार अधिकारी के साथ उपरोक्त कार्यक्रम में 165 कृषकों की सहभागिता के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। ❑

कार्यशाला में उचहेरा विकास खंड के कृषकों द्वारा जैविक पद्धति से उत्पादित मूली एवं पालक का प्रदर्शन किया गया।

बेहतर फसल उत्पादन के लिए ड्रोन तकनीक उपयोगी, केवीके कर रहा जागरूक

मझगवां/ दुनियाभर में कृषि कार्यों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और ड्रोन का उपयोग बढ़ रहा है। भारत में भी सरकार कृषि क्षेत्र में तकनीक के उपयोग को बढ़ावा दे रही है, ताकि बेहतर उपज के साथ-साथ किसानों की आय में भी वृद्धि हो। कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां ड्रोन तकनीक पर किसानों को जागरूक करने का काम कर रही है। गांव गांव ड्रोन के फायदे व उपयोगिता के बारे में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक ग्राम वासियों को अवगत करा रहे हैं और ड्रोन का प्रदर्शन कर रहे हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी ने बताया कि महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों के तमाम किसान खेती-किसानी के कार्यों में ड्रोन का उपयोग करने लगे हैं। कृषि ड्रोन खेती के आधुनिक उपकरणों में से एक है, जिसके इस्तेमाल से किसानों को काफी मदद मिल सकती है। ड्रोन से बड़े क्षेत्रफल में महज कुछ मिनटों में कीटनाशक, खाद या दवाओं का छिड़काव किया जा सकता है। इससे न सिर्फ लागत में कमी आएगी, बल्कि समय की बचत भी होगी। सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि सही समय पर खेतों में कीट प्रबंधन किया जा सकेगा।

कृषि ड्रोन बंटाएगा हाथ

पिछले कुछ वर्षों में कृषि ड्रोन तकनीक में काफी सुधार हुआ है। अब किसान भी इस बात को समझने लगे हैं कि कैसे ड्रोन तकनीक से उन्हें मदद मिल सकती है। आमतौर पर कृषि क्षेत्र में ड्रोन का उपयोग मैपिंग, सर्वेक्षण से लेकर कीटनाशक छिड़काव तक में होता है। वैसे, कृषि ड्रोन दूसरे ड्रोन से अलग नहीं हैं। इस छोटे यूएवी (मानव रहित विमान) को किसानों की जरूरतों के हिसाब से बदला जा सकता है। हालांकि अब कई ड्रोन विशेष रूप से कृषि उपयोग के लिए ही विकसित किए जा रहे हैं।

कीटनाशकों का छिड़काव

ड्रोन के माध्यम से फसलों पर कीटनाशकों का छिड़काव करना आसान हो गया है। यह हानिकारक रसायनों से मानव संपर्क को भी सीमित करता है। कृषि ड्रोन इस कार्य को पारंपरिक तरीके की तुलना में बहुत तेजी और बेहतर तरीके से अंजाम दे सकता है। आरजीबी सेंसर और मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर वाले ड्रोन समस्याग्रस्त क्षेत्रों की सटीक पहचान और उपचार कर सकते हैं। अन्य तरीकों की तुलना में ड्रोन से हवाई छिड़काव पांच गुना तेज होता है।

कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा एग्री ड्रोन स्प्रेयर से छिड़काव का प्रदर्शन

मझगवां/ कृषि कार्यों के लिए परिशुद्ध कृषि (प्रिसिजन एग्रीकल्चर) का प्रचलन बढ़ रहा हैं जिसमें ड्रोन का उपयोग एक महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय

कृषि अनुसन्धान परिषद-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसन्धान संस्थान जोन 9 जबलपुर द्वारा एग्री ड्रोन परियोजना हेतु 250 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर प्रदर्शन का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं जिसके अन्तर्गत विगत एक माह से एग्री ड्रोन द्वारा कीटनाशक एवं जल विलेय उर्वरकों का पर्णीय छिड़काव किया जा रहा हैं। इस परियोजना का शुभारम्भ नागौद विकासखण्ड के ग्राम खमरेही निवासी श्री अजय सिंह के कृषि प्रक्षेत्र पर गेहूं में नैनो यूरिया का पर्णीय छिड़काव कर किया गया। जिले के नागौद, सोहावल, उचेहरा, अमरपाटन विकासखण्डों के किसानों के खेतों पर लगभग 40 हेक्टेयर क्षेत्रफल में पर्णीय छिड़काव किया जा चुका हैं। अन्य विकासखण्डों जैसे रामपुर बघेलान, रामनगर, मैहर एवं मझगवां के किसानों के खेतों पर जल्द ही एग्री ड्रोन का प्रदर्शन किया जाएगा।

कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां के एग्री ड्रोन परियोजना प्रभारी डॉ.अजय चौरसिया ने बताया कि एग्री ड्रोन को चलाने के लिए ड्रोन पायलट की आवश्यकता होती हैं जिसके लिए भारत सरकार के नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा रिमोट पायलट प्रशिक्षण संस्थाओं (आर.पी.टी.ओ.) के माध्यम से 5 दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाता हैं। 18 वर्ष से अधिक के वयस्क जो कम से कम हाई स्कूल पास हो और जिनके पास पासपोर्ट हो वे इस प्रशिक्षण लेने के लिए योग्य होते हैं। इस प्रशिक्षण में ड्रोन प्रचालन के सभी पहलुओं पर सैद्धांतिक, सिमुलेटर एवं प्रायोगिक कक्षाएं होती हैं। इसके बाद परीक्षाएं आयोजित होती हैं जिसको पास करने पर ही नागर विमानन महानिदेशालय (डी.जी.सी.ए) द्वारा रीमोट पायलट सर्टिफिकेट प्रदान किया जाता हैं। इसके बाद ही प्रशिक्षणार्थी ड्रोन चलाने के लिए अधिकृत होता हैं।

ड्रोन संचालन करते समय एयरक्राफ्ट एक्ट 1937 के नियम 15। और नियम 133। के प्रावधान के अन्तर्गत नागरिक उड्डयन आवश्यकताओं को पूरा करना होता हैं।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा 25 अगस्त, 2021 को ड्रोन नियमों को अधिसूचित किया गया है। नागर विमानन महानिदेशालय (डी.जी.सी.ए) द्वारा भारतीय एयरस्पेस को तीन जोनों में बाँटा गया हैं-

रेड जोन– उड़ान प्रतिबंधित क्षेत्र

येलो जोन- 200 फीट तक 8 किमी के दायरे तक एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) की अनुमति जरूरी है और 200 फीट तक 8 से 12 किमी के दायरे के बीच किसी अनुमति की जरूरत नहीं है।

ग्रीन जोन- 400 फीट तक किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

इन जोनों की विस्तृत जानकारी आधारित मैप नागर विमानन महानिदेशालय की डिजिटल स्काइ https://digitalsky.dgca.gov.in वेबसाईट पर उपलब्ध होती हैं। इन जोन को देखकर ही ड्रोन के संचालन का प्लान बनाया जाता हैं। इस वेबसाईट पर प्रमाणीकृत ड्रोन पायलट की सूची, ड्रोन पंजीकरण, नियम एवं अधिनियमों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध रहती हैं।

अभी उपलब्ध 10 लीटर क्षमता वाले एग्री ड्रोन 7 मिनट में एक एकड़ क्षेत्रफल पर छिड़काव कर सकता हैं। 10 लीटर पानी में 1 एकड़ में लगने वाले कीटनाशक या जल विलेय उर्वरकों की मात्रा का उपयोग किया जाता हैं। एग्री ड्रोन की एक बार बैटरी चार्जिंग करने पर 20 मिनट में 2.5 एकड़ क्षेत्रफल पर छिड़काव कर सकता हैं। 3 बैटरी सेट उपलब्ध होने पर लगभग 25 एकड़ प्रतिदिन छिड़काव किया जा सकता हैं। एग्री ड्रोन की कीमत लगभग 10 लाख रुपए होती हैं। ❑

नेहरु युवा केन्द्र सतना एवं रीवा का सामुदायिक विकास प्रशिक्षण

सामाजिक विकास में बड़ी-बड़ी कंपनियों को अपने लाभ के प्रतिशत को समाज हित में खर्च करने के लिए संसद द्वारा कानून बनाया गया है।

चित्रकूट/ नेहरु युवा केन्द्र सतना द्वारा उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट में सतना एवं रीवा जिले के युवाओं का तीन दिवसीय युवा नेतृत्व एवं सामदयिक विकास प्रशिक्षण का समापन श्री आर सी यादव वाइस प्रेसिडेंट प्रिज्म सीमेंट कंपनी सतना, डॉ. वीरेंद्र व्यास प्राध्यापक महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, श्री देवेंद्र मिश्रा एजीएम-सीएसआर, उद्यमिता विद्यापीठ के संयोजक मनोज सैनी के मुख्य आतिथ्य में किया गया।

युवा नेतृत्व एवं सामुदायिक विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रिज्म सीमेंट सतना मनकाहरी के वाइस प्रेसिडेंट श्री आरसी यादव ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा विकासशील अर्थव्यवस्था में समाज मे सामुदायिक नेतृत्व का महत्वपूर्ण स्थान है। क्षेत्रीय विकास के लिए नेहरू युवा केंद्र इस प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित कर एक नई पीढ़ी नेतृत्व के लिए तैयार कर रही है, हमें मानवीय दृष्टिकोण रखते हुए संवेदनशीलता के साथ समाज का विकास हो तथा सभी को रोजगार के भी पर्याप्त अवसर मिलें इस हेतु युवाओं को कार्य करने की जरूरत है। हमारी आप सभी को शुभकामनाएं आप यशस्वी हो और अपने क्षेत्र में बेहतर ढंग से काम करें।

इसी अवसर पर प्रिज्म सीमेंट के असिस्टेंट जनरल मैनेजर सीएसआर के अंतर्गत देवेंद्र मिश्रा ने अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि इस सामाजिक विकास में बड़ी-बड़ी कंपनियों को अपने लाभ के प्रतिशत को समाज हित में खर्च करने के लिए संसद द्वारा कानून बनाया गया है। कंपनियां इसी भूमिका को निभाते हुए स्वास्थ्य, शिक्षा एवं पर्यावरण के क्षेत्र में बेहतर काम कर रही हैं। आप कंपनियों के सहयोग से

भी अपने-अपने क्षेत्र में विभिन्न विकास की योजनाएं तैयार कर सकते हैं। ग्रामीण इंफ्रास्ट्रक्चर को डिवेलप करने के लिए भी सीएसआर का उपयोग होता है। आप आएं हमसे बातचीत करें और ग्रामों के विकास में हम आपका सहयोग करेंगे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. वीरेंद्र व्यास ने अपनी बात रखते हुए प्रशिक्षणार्थियों को कहा कि जब भी हम नेतृत्व की बात करते हैं तो उसमें संचार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नेतृत्व के अंतर्गत हमें अपनी बात रखने की कला कौशल का भी विकास करना है।

त्रिदिवसीय प्रशिक्षण की आख्या श्री जे आर पांडे वरिष्ठ लेखाकार रीवा ने प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं में स्वप्रेरणा से समाज सेवा के लिय कार्य करने की क्षमता विकसित करने के साथ ही उनके व्यक्तित्व विकास के लिये समय प्रबन्धन, व्यक्तित्व विकास अन्तर, व्यक्तिगत संबंध, उद्यमशीलता, परियोजना निर्माण कार्यक्रमों के आयोजन एवं नियोजन पर प्रशिक्षण का प्रकाश डाला गया।

उद्यमिता विद्यापीठ के संयोजक मनोज सैनी ने बताया कि चित्रकूट की मिट्टी के स्पर्ष से लोगों को एक ऊर्जा प्राप्त होती है। नेहरू युवा केन्द्र के युवाओं से अपेक्षा है कि इस ऊर्जा को यहां से प्राप्त कर अन्य युवाओं को निखारने का कार्य करें। गांव-गांव में सभी युवा नेहरू युवा केन्द्र के माध्यम से सरकारी गैर सरकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार का कार्य करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में युवा मण्डल का कार्य सराहनीय है।

अतिथि उद्बोधन से पूर्व प्रतिभागियों ने अपने अनुभव बांटते हुए बताया कि 3 दिवसीय प्रशिक्षण में सम्मिलित विभिन्न विषयों पर प्रबुद्धजनों का व्याख्यान हुआ एवं प्रशिक्षण स्थल में पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख जैसे महान समाजसेवियों के बारे में जानने का अवसर प्राप्त हुआ है। प्रशिक्षण में सहभागिता पर अनुशासन एवं समय प्रबन्धन जैसे मेरे जीवन में अमूलचूक परिवर्तन आयेगा। दैनिक दिनचर्या में समाहित योग के सत्र को मैं अपने जीवन में प्रतिदिन शामिल करने का प्रयास करूंगा।

समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को अतिथियों द्वारा सहभागिता प्रमाण पत्र दिया गया। समापन अवसर पर कार्यक्रम का संचालन एम. पी. द्विवेदी लेखपाल सतना द्वारा किया गया। इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण में रीवा एवं सतना के 80 युवा प्रतिभागियों ने भाग लिया। ❑

दीनदयाल आईटीआई चित्रकूट के ओपन कैम्पस में 150 छात्रों का हुआ चयन

चित्रकूट/ दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र चित्रकूट में महाराष्ट्र की प्रसिद्ध कंपनी धूत ट्रांसमिशन प्राइवेट लिमिटेड का ओपन केंपस संपन्न हुआ। जिसमें 200 छात्र-छात्राओं ने पंजीयन कराया, जिसमें से 150 छात्र-छात्राओं का चयन कंपनी के एचआर हेड श्री देव शंकर पात्रा एवं श्री स्वदेश जी के द्वारा डायरेक्ट इंटरव्यू के माध्यम से किया गया।

आईटीआई के प्राचार्य श्री संजय दुबे ने बताया कि इस ओपन कैम्पस में सतना एवं चित्रकूट के 10वीं, 12वीं एवं आईटीआई पास छात्रों को शामिल किया गया, जिनकी उम्र 18 से 27 के बीच है। चयनित हुए छात्रों को प्रस्ताव पत्र 12 जनवरी राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर दिया गया।

यह आयोजन खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग प्रशिक्षण केंद्र उद्यमिता विद्यापीठ एवं जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट के सहयोग से संपन्न हुआ।

दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट के उद्यमिता विद्यापीठ द्वारा राष्ट्रीय एवं राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए संचालित दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र चित्रकूट क्षेत्र के ग्रामीण लोगों को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से जोड़कर रोजगारोन्मुखी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए 2006 से कार्यरत है।

जिसमें 8 व्यावसायिक ट्रेंडों को इनमें शामिल किया गया है। जिनकी प्रशिक्षण अवधि 1 से 2 वर्ष तक है- इनमें इलेक्ट्रीशियन, फिटर, कोपा, फोटोग्राफर, प्रिजर्वेशन आफ फ्रूट्स एंड वेजिटेबल, कटिंग एंड सुइंग, ड्राफ्ट्समैन, प्लंबर आदि को शामिल किया गया है।

इसके अलावा लघु अवधि के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। ❑

युवा दिवस पर ओपन कैम्पस में चयनित छात्रों को मिला प्रस्ताव पत्र

चित्रकूट/ दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र चित्रकूट द्वारा लोहिया सभागार में जन शिक्षण संस्थान एवं खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग प्रशिक्षण केंद्र, उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन, श्री देव शंकर पात्रा एचआर हेड एवं श्री स्वदेश कुमार सहायक एचआर धूत ट्रांसमिशन प्राइवेट लिमिटेड सम्भाजी नगर, औरंगाबाद (महाराष्ट्र), डॉ. अशोक पांडे समाज शिल्पी दम्पति प्रभारी द्वारा युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी के चित्र पर दीपप्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. अशोक पांडेय ने स्वामी जी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका आधारभूत सिद्धांत था कि शिक्षा से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है, लड़के और लड़कियां दोनों को समान शिक्षा मिलने का अधिकार होना चाहिए, स्त्रियों को विशेष रूप से धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए।

इस दौरान श्री अभय महाजन संगठन सचिव डीआरआई ने कहा कि स्वामी जी का जीवन आध्यात्मिकता, राष्ट्रभक्ति और कर्मठता के लिए सदैव प्रेरित करता है। उनके उच्च विचार एवं उनके आदर्श सभी युवाओं का सदैव मार्गदर्शन करते रहेंगे। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को अपने जीवन में अपनाकर हम सभी देश को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य कर सकते हैं। स्वामी जी ने नैतिकता को मन के नियंत्रण से जोड़ा, सत्य, पवित्रता और निःस्वार्थता को उन लक्षणों के रूप में देखा जो इसे मजबूत करते हैं। उन्होंने सभी से पवित्र, निस्वार्थ और श्रद्धा रखने की सलाह दी साथ ही ब्रह्मचर्य का समर्थन किया, क्योंकि इसे वे शारीरिक और मानसिक सहनशक्ति और वाकपटुता का स्रोत मानते थे। सभी सफल प्रतिभागियों से उन्होंने कहा कि आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की हम कामना करते हैं आप सभी पूर्ण निष्ठा, लगन व ईमानदारी के साथ समय पालन करते हुए निरंतर प्रगतिपथ पर आगे बढ़िये यही आप सबका प्रारम्भ है। धूत ट्रांसमिशन प्राइवेट लिमिटेड औरंगाबाद (महाराष्ट्र) के एचआर हेड श्री देव शंकर पात्रा ने सभी सफल प्रतिभागियों को कम्पनी द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं व उसके उद्देश्यों की विस्तृत जानकारी प्रदान कर जीवन में समय एवं समाज के साथ सामंजस्य बनाकर बेहतर करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंत में अतिथियों द्वारा दीनदयाल आईटीआई के द्वारा आयोजित ओपन कैम्पस में धूत ट्रांसमिशन प्राइवेट लिमिटेड औरंगाबाद (महाराष्ट्र) के लिए चयनित छात्र-छात्राओं को प्रस्ताव पत्र प्रदान किये गए। ❑

खिचड़ी एवं तिल गुड़ के सामूहिक भोज के साथ मनाया गया संक्रांति उत्सव

चित्रकूट/ उद्यमिता विद्यापीठ स्थित पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क में संस्थान के समस्त कार्यकर्ताओं ने मकर संक्रांति का उत्सव मनाया। इस अवसर पर मुंबई से मशहूर चित्रकार सुहास बाहुलकर, आर्किटेक्ट पुनीत सोहेल दिल्ली, डायरोमा विशेषज्ञ अशोक सोनकुरे, इलैक्ट्रिक इंजीनियर मुंबई से प्रतीक प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। सभी अतिथियों को समाजशिल्पी दंपत्ति प्रभारी डॉ. अशोक पांडे एवं उद्यमिता विद्यापीठ के संयोजक मनोज सैनी ने रामनामी व बैजयंती माला पहनाकर स्वागत किया गया। अतिथियों ने सर्वप्रथम पं दीनदयाल उपाध्याय जी की विशाल प्रतिमा के समक्ष पुष्पार्चन किया। इस मौके पर सामूहिक भोज में खिचड़ी एवं तिल गुड़ के साथ मकर संक्रांति मनाई गई।

मकर संक्रांति के महत्व को विस्तार से बताते हुए डॉ. अशोक पांडे ने कहा कि मकर संक्रांति दरअसल बसंत की आहट ही नहीं, बसंत के आगमन की सूचना भी है।

हमारे जितने भी पर्व त्योहार हैं किसी ना किसी प्रसंग से जुड़े हैं और त्यौहार भी ऋतुओं से जुड़े हैं। मकर संक्रांति जैसे व्यापक त्योहार का विशेष महत्व है। जैसे हम लोग आहुति के लिए हवन सामग्री में मिश्रित तिल, जौ, अक्षत मिलाते हैं जिसमें तिल सर्वोपरि है पूजा में अक्षत का विशेष महत्व बताया गया है। इसी प्रकार सामाजिक जीवन में हमारा हिंदू समाज एक है, जाति अलग-अलग हो सकती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानव दर्शन में प्रकृति को भी समाहित किया है।

मकर संक्रांति सामाजिक समरसता का पर्व है। जिस प्रकार गुड़ स्वयं को अग्नि पर तपाकर व गला कर बिखरे हुए तिल के दानों को अपने साथ जोड़ लेता है और एक स्वादिष्ट व्यंजन का निर्माण करता है, ठीक उसी प्रकार हमें भी गुड़ की भूमिका निभानी है और स्वयं को तपाकर अपने संपूर्ण हिंदू समाज को एकता के सूत्र में पिरोना है। ❑

पद्मश्री से नवाजे गए बुंदेलखंड के जल योद्धा श्री उमा शंकर पांडेय ने सियाराम कुटीर पहुंचकर नानाजी को किया नमन

चित्रकूट/ पानी के पहरेदार बुंदेलखंड के बांदा जिले के जखनी गांव के जल योद्धा उमाशंकर पांडेय को भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया है। यह जनपद ही नहीं बल्कि बुंदेलखंड के लिए गौरव की बात है। श्री उमाशंकर पांडेय ने खेत पर मेड़ और मेड़ पर पेड़ का मंत्र पूरे देश को दिया। सामुदायिक सहभागिता से उन्होंने जल संरक्षण की दिशा में अनेक कार्य किए। भारत रत्न राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख के समाज मूलक कार्यों से प्रभावित श्री पांडेय दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोगी कार्यकर्ता के रूप में कई रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहे है तथा संस्थान के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जल प्रबंधन के क्षेत्र में बुंदेलखंड को एक नई दिशा प्रदान की है।

गणतंत्र दिवस पर उनको पदमश्री की घोषणा होते ही सर्वप्रथम उन्होंने चित्रकूट आकर सियाराम कुटीर नानाजी के कक्ष में पहुंचकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने श्री उमा शंकर पांडे जी का शाल श्रीफल के साथ उनको सम्मानित किया और देश के सर्वोच्च सम्मान पदमश्री के लिए बधाइयां दी।

श्री उमाशंकर पांडेय कहते हैं कि सरकार ने उनकी उपलब्धि का मान रखते हुए उन्हें इस सम्मान से नवाजा है। उनके 30 वर्ष से निस्वार्थ भाव से किए गए कार्य का यह प्रतिफल है।

केंद्र सरकार ने उनके जखनी माडल को बुंदेलखंड सहित देश के सूखा प्रभावित राज्यों में लागू किया है। उनके माडल पर किसानों ने बुंदेलखंड सहित देश के लाखों हेक्टेयर भूमि में मेड़बंदी की है।

बांदा के जखनी गांव निवासी सर्वोदय कार्यकर्ता श्री उमाशंकर पांडेय दिव्यांग हैं। इसके बावजूद जल संरक्षण की दिशा में उन्होंने उत्कृष्ट कार्य किए हैं। उन्होंने परंपरागत विधि से बगैर सरकार की सहायता से 'खेत पर मेड़ और मेड़ पर पेड़' मंत्र को धरातल पर उतारा और उसे वर्षा जल संरक्षण का जरिया बनाया। उनके इस अभियान की प्रशंसा मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी कर चुके हैं।

पानी के पहरेदार श्री उमाशंकर पांडेय कहते हैं कि उन्होंने कभी एक रुपये का सरकारी अनुदान नहीं लिया और न ही किसी पुरस्कार के लिए आवेदन किया। जब तक स्वास्थ्य ठीक है, तब तक वर्षा जल संरक्षण की दिशा में काम करते रहेंगे। पौधारोपण करके भूजल संरक्षण का प्रयास जारी रहेगा। उन्होंने सामुदायिक सहभागिता से पुरखों की विधि से जल संरक्षण की मुहिम छेड़ी। गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया है। ❑

चित्रकूटधाम पधारे श्री योगानंदेश्वर पीठाधिपति कर्नाटक, आरोग्यधाम में संस्थान के कार्यकर्ताओं को दिया आशीर्वचन

चित्रकूट/ श्री दक्षिणाय श्रृंगेरी शारदा पीठाधीश्वर श्रीमद्‌जगतगुरु शंकराचार्य जी द्वारा अनुगृहीत श्री योगानंदेश्वर पीठाधिपति कर्नाटक एवं वेदांत भारती के संरक्षक परम पूज्य श्री श्री शंकरभारती महास्वामी जी महाराज अपने दो दिवसीय प्रवास पर चित्रकूटधाम पधारे। अयोध्या से चलकर प्रयागराज होते हुए चित्रकूटधाम पधारे स्वामी जी ने इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के आरोग्यधाम में संस्थान के सभी कार्यकर्ताओं को आशीर्वचन भी प्राप्त हुआ।

परम पूज्य श्री श्री शंकर भारती महास्वामी जी महाराज मठाधिपति यडतोरे श्री योगानन्देश्वर सरस्वती मठ, कर्नाटक ने अपने उद्बोधन में कहा कि ज्ञान शब्द का अर्थ महान एवं व्यापक है। ज्ञान परंपरा हमारी संस्कृति का स्वरूप है। आदि शंकराचार्य ने ज्ञान परंपरा की जो व्यवस्था दी है, उसमें सर्व मंगल एवं सच्चिदानंद का भाव निहित है। राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य से आदि शंकराचार्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थापित करने के लिए देश के चारों हिस्सों उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम में मठों की स्थापना की। साथ ही उन्होंने समाज में बाह्य, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक एकता के लिए भी प्रेरित किया।

अयोध्या से चलकर प्रयागराज होते हुए चित्रकूटधाम पधारे स्वामी जी ने इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के आरोग्यधाम में संस्थान के सभी कार्यकर्ताओं को आशीर्वचन भी प्राप्त हुआ।

श्री श्री शंकरभारती महास्वामी जी महाराज ने कहा कि अयोध्या नगरी सम्पूर्ण विश्व की आध्यात्मिक राजधानी बनने वाली है और इसके लिए उस तीर्थ क्षेत्र में आदि गुरु शंकराचार्य जी के जीवन चरित्र पर आधारित ज्ञान, बोध एवं संस्कृति का बड़ा केन्द्र बने,

ऐसे ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय और राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख के समाज जीवन के प्रयोगों से पाथेय प्राप्त करके युवा पीढ़ी उसका अनुसरण करे। जिस प्रकार से जगद्गुरु शंकराचार्य जी द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति की पुर्नस्थापना की गई थी उसी अनुरुप इस तरह के केन्द्रों से मार्गदर्शन प्राप्त करके हम भारत को पुनः विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित कर पाएंगे।

महास्वामी जी ने सभी को आग्रह पूर्वक एकात्मवाद का पालन करने व प्रचार प्रसार करने हेतु आग्रह किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में एकात्मवाद के तीनों स्वरूपों, (प्रथम) बाह्य रूप, (द्वितीय) व्यवहारिक रूप व (तृतीय) आध्यात्मिक रूप को उल्लेखित करते हुए विस्तृत चर्चा की व सभी उपस्थित लोगों से आध्यात्मिक रूप को एकरूपता से प्रचारित व प्रसारित करने हेतु विशेष ध्यान देने हेतु आग्रह किया। उन्होंने कहा कि ऐसा करने से ही हम भारत में एकरूपता ला पाएंगे।

जिस प्रकार से जगद्गुरु शंकराचार्य जी द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति की पुर्नस्थापना की गई थी उसी अनुरुप इस तरह के केन्द्रों से मार्गदर्शन प्राप्त करके हम भारत को पुनः विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित कर पाएंगे।

स्वामी जी ने दीनदयाल शोध संस्थान के राम दर्शन प्रकल्प का भी भ्रमण किया। इस मौके पर स्वामी जी महाराज को शाल, श्रीफल एवं पुष्प अंकित कर उनका सर्वस्वत अभिनंदन दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने किया। श्री महाजन ने महाराज जी को राम दर्शन पेंटिंग एवं राष्ट्र ऋषि नानाजी के जीवन पर आधारित पुस्तक भी भेंट की। ❑

कीटनाशकों की उपयोगिता पर किसान संगोष्ठी

चित्रकूट/ उद्यमिता विद्यापीठ के लोहिया सभागार में हिंदुस्तान इंसेक्टिसाइड लिमिटेड (हिल) द्वारा रासायनिक दवाओं का विवेकपूर्ण एवं कम से कम उपयोग विषय पर एक दिवसीय कृषक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चरणों में द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। साथ ही अतिथियों को पुष्पगुच्छ एवं मोमेंटो देकर स्वागत एवं सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि प्रभु श्री राम की तपोभूमि हम सब के लिए एक अकल्पनीय वरदान है। रासायनिक दवाओं का असर मृदा दूषित तक ही सीमित नहीं बल्कि वातावरण से लेकर खानपान व माता के दूध में भी पाया जा रहा है। पंजाब से चलने बाली कैंसर नाम की ट्रेन का उदाहरण देते हुए कहा कि यही रासायनिक उर्वरकों एवं दवाओं की अत्यधिक मात्रा उपयोग करने का परिणाम है। नाना जी ने कहा था कि यदि स्वाभिमान से जीना है तो स्वावलंबी बनना होगा। और उन्होंने कहा कि ऐसे घातक उत्पादों का उपयोग बहुत ही सोच समझ के साथ करे, जो हमारी मिट्टी, वातावरण एवं समाज को दूषित कर रहा हो।

> प्रभु श्री राम की तपोभूमि हम सब के लिए एक अकल्पनीय वरदान है। रासायनिक दवाओं का असर मृदा दूषित तक ही सीमित नहीं बल्कि वातावरण से लेकर खानपान व माता के दूध में भी पाया जा रहा है।

इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र गनीवा के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. चंद्रमणि त्रिपाठी ने मानव समाज मे बढ़ रही कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों को ध्यान में रखते हुए कहा कि केमिकल उर्वरक एवं दवायें समाज के लिए अभिशाप है। आज पूरा देश जैविक एवं प्राकृतिक कृषि की तरफ बढ़ रहा है जिससे समाज के साथ साथ वातावरण को बचाया जा सके।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि श्री डी श्रीनिवास राजू, वित्तीय निदेशक, हिंदुस्तान इंसेक्टिसाइड लिमिटेड द्वारा वीडियो के माध्यम से दवाओं के प्रति रखने वाली सावधानी एवं उसके दुष्परिणाम दिखाए गए। उन्होंने बताया कि यदि रासायनिक दवाओं के प्रति

लापरवाही हुई तो उसके गंभीर परिणाम मिल सकते है इसलिए कोई भी कार्य सावधानी पूर्वक करे। उन्होंने कंपनी द्वारा बनाये जा रहे उत्पादों पर चर्चा की तथा कहा कि यह संस्था कीटनाशी, कवकनाशी, खरपतवार नाशी जैव उर्वरक सिनेटीजर, नेट आदि उत्पाद बनाने का कार्य करती है।

कैम्को एम डी श्री जितेंद्र नारायण ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि भगवान राम की कर्मभूमि चित्रकूट में कृषकों को रसायनों के प्रति सजग रहना या सावधानी रखने पर जागरूक किया जा रहा है। कार्यक्रम में जिला कृषि अधिकारी चित्रकूट श्री राजपति शुक्ला ने कृषकों को सरकारी योजनाओं में दवाओं एवं उर्वरको, बीजों के अनुदान के बारे में बताया और रासायनिक दवाओं पर निर्भरता कम करने की बात कही।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री प्रमोद सैनी प्रबंध निदेशक ने कहा कि सरकार द्वारा कृषकों के हित में चलाई जा रही योजनाएं उनके लिए बहुत ही लाभदायक है। सरकार किसानों के चहुमुखी विकास पर कार्य रही है। नाना जी द्वारा समाज के लिए किए गए कार्यों पर चर्चा करते हुए कहा कि ऐसे राष्ट्र ऋषि जिन्होंने समाज को स्वावलंबी बनाने के लिए विभिन्न कार्य किये जो आज हम सब के लिए प्रेरणा के स्रोत है। उन्होंने कहा रसायनिक दवाओं एवं उर्वरकों से स्वास्थ्य पर पड़ रहे बुरा असर आने बाली पीढ़ी के लिए खतरनाक साबित हो सकता है, इसलिए हम सब को अभी सजग होना होगा और अभी से सावधानी रखनी होगी।

कार्यक्रम में सभी अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद डॉ. मनोज कुमार शर्मा मौसम वैज्ञानिक केवीके गनीवां द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री मनोज सैनी संयोजक उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट द्वारा किया गया। कार्यक्रम में हिंदुस्तान इंसेक्टिसाइड लिमिटेड से सुनील कुलश्रेष्ठ और अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे। दीनदयाल शोध संस्थान से डॉ. सतीश पाठक केवीके गनीवा, और श्री सत्यम चौरिहा केवीके मझगवां एवं छन्नूलाल उद्यमिता विद्यापीठ से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में चित्रकूट जनपद के 15 स्वावलंबन केंद्रों से 180 कृषकों द्वारा संगोष्ठी में प्रतिभाग किया गया। ❑

सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय में बारहवीं के छात्रों का शुभकामना समारोह

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षणिक प्रकल्प सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय चित्रकूट में विवेकानंद सभागार में कक्षा बारहवीं के बच्चों का शुभकामना समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, गुरुकुल संकुल के प्रभारी श्री संतोष मिश्रा, विद्यालय के सचिव डॉ. अशोक पांडेय, विद्यालय के प्राचार्य श्री मदन तिवारी तथा प्रधानाचार्य कालिका श्रीवास्तव की गरिमामय उपस्थिति में छात्राओं ने अपने संस्मरण एवं अनुभव कथन भी प्रस्तुत किए साथ ही 11वीं के छात्र-छात्राओं ने उन्हें आकाश भर शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर समस्त शिक्षकगण और समाज के बहुत से संभ्रांत नागरिक और सम्मानीय अभिभावक भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की और बच्चों को ढेरों शुभकामनाएं दी। श्री महाजन ने कहा कि प्रारंभिक स्तर की कक्षाओं में पढ़े लिखे गए विषय और संस्कार जीवन पर्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। छात्र-छात्राओं में अनुशासन और उनकी प्रतिभा विद्यालय की पहचान है। बोर्ड की परीक्षा नजदीक है। परीक्षा में बेहतर परिणाम से स्कूल के साथ माता पिता का गौरव बढ़ेगा। उन्होंने छात्र-छात्राओं से मन लगाकर पढ़ाई करने और अच्छे अंक से सफलता हासिल कर विद्यालय, परिवार और गाँव का नाम रोशन करने का अनुरोध किया। ❑

जन शिक्षण संस्थान में अनुदेशकों हेतु क्षमता संवर्धन एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम

चित्रकूट/ कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा अनुदेशकों हेतु एक दिवसीय क्षमता संवर्धन एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन गढ़ीवां स्थित केन्द्र पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जन शिक्षण संस्थान के प्रबंध मंडल के उपाध्यक्ष संतोष अग्रवाल, सदस्य श्रीमती रूपा अग्रवाल, दीनदयाल शोध संस्थान के उप महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल, कार्यकारी निदेशक जन शिक्षण संस्थान राजेंद्र सिंह एवं दिशा दर्शन केंद्र के प्रभारी एवं कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विनीत श्रीवास्तव द्वारा दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन द्वारा किया गया।

कार्यकारी निदेशक राजेन्द्र सिंह ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दीनदयाल जी महान चिंतक थे, वे संघटन में विश्वास करते थे वह भारत को सिर्फ जमीन का टुकड़ा नहीं बल्कि जीता जागता एक महान राष्ट्र मानते थे, युगों युगों से स्थापित भारतीय संस्कृति और सनातन विचारधारा को देश के लिए प्रगतिशील मानते थे और अपने इसी सिद्धांत के जरिये उन्होंने एकात्म मानव दर्शन विचारधारा प्रस्तुत को किया। जिसके जरिये प्रत्येक मानव का बिना किसी भेदभाव के कल्याण सम्भव है। हमारा धर्म चाहे कोई क्यों न हो लेकिन हमारी पहचान भारतीयता है। अपने इसी देश प्रेम के जरिये भारत को विश्व में अलग पहचान दिलायी जा सकता है। अनेकता में एकता और विभिन्न रूपों में एकता की अभियक्ति भारतीय संस्कृति की सोच रही है। हमें उनके जीवन दर्शन से सीख लेकर समाज व राष्ट्र हित में लगना होगा तभी उनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित होगी।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए विनीत श्रीवास्तव ने कहा-उन्मुखीकरण कार्यक्रम का उद्देश्य नए प्रशिक्षार्थी, अनुदेशकों या कर्मचारी को अपने विभाग, स्थिति, जिम्मेदारियों और कार्य संस्कृति को समायोजित करने में मदद करना है। उन्मुखीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत नवागंतुक अपने कार्य, समूह के सदस्यों, विभिन्न प्रक्रियाओं आदि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करते है। दक्षताओं का तात्पर्य हमारे कौशल, योग्यता और ज्ञान के संयोजन से है। हमारा चरित्र, अनुशासन, संवेदनशीलता, समयपालन, जिम्मेदारी निर्वहन की क्षमताओं का निरन्तर विकास करना ही ऐसे कार्यक्रमों का ध्येय है। प्रतिदिन कुछ नया सीखने एवं करने की चाह ही हमें बेहतर बनाने में मददगार साबित होती है।

लेखाकार श्री अजय पांडेय ने वित्तीय प्रबंधन एवं बैंकों से समन्वय पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि जिस प्रकार किसी मशीन को चलाने हेतु ऊर्जा के रूप में तेल, गैस या बिजली की आवश्यकता होती है उसी प्रकार किसी भी संगठन के संचालन हेतु वित्त की आवश्यकता होती है। व्यवसाय को प्रारंभ करने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है जिसके लिए कई माध्यमों जैसे बैंक, क्राउड फंडिंग एवं व्यक्तिगत पूंजी इत्यादि से इकट्ठा किया जा सकता है इसमें जिला उद्योग केंद्र, KVIC भी कई प्रकार के लोन प्रदान करते हैं जिसके लिए कई वैधानिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना होता है जिनके पूर्ण करने पर बैंक या संस्थाओं द्वारा आसानी से लोन उपलब्ध कराया जाता है। प्रशिक्षण के पश्चात

जिला उद्योग केंद्र से कैसे जुड़ कर हम लाभ प्राप्त कर सकते हैं इस पर भी जानकारी प्रदान की गई।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रबन्ध मण्डल के उपाध्यक्ष सन्तोष अग्रवाल ने कहा कि उन्मुखीकरण संस्था एवं व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने व अन्य सहयोगियों के मध्य एक दूसरे को जोड़ने में सक्षम बनाता है। ऐसे क्रियाविधियों से हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है। संस्थान द्वारा संचालित गतिविधियों से हम सभी स्वयं तो लाभान्वित होते ही है अन्य लोगों को भी हम स्वावलंबी बनाने में मददगार साबित होते हैं। कार्यक्रम में संस्थान से निसबर्ड में प्रशिक्षण लेने गए प्रतिभागियों ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन सहायक परियोजना समन्वयक अनिल कुमार सिंह ने किया तो वहीं धन्यवाद ज्ञापन बनारसी लाल पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सहायक परियोजना समन्वयक प्रभाकर मिश्र, सुघर सिंह सहित 87 अनुदेशक उपस्थित रहे। ❑

विंध्य बोर्ड प्राइवेट लिमिटेड में आई.टी.आई. छात्रों का हुआ शैक्षणिक औद्योगिक भ्रमण

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट द्वारा संचालित दीनदयाल औधौगिक प्रशिक्षण केन्द्र (आई.टी.आई.) के कोपा, इलेक्ट्रीशियन, प्लम्बर एवं फिटर के छात्रों ने शैक्षणिक औद्योगिक भ्रमण के तहत सतना की विंध्य बोर्ड प्राइवेट लिमिटेड का अवलोकन किया। साथ ही वहां पर किस प्रकार से काम किया जाता है उसको बारिकी से समझा।

प्रशिक्षाणार्थियों को अध्ययन व शोध कार्य हेतु प्रथम व अंतिम वर्ष में नजदीकी उद्योगों व कार्यशालाओं में औद्योगिक भ्रमण की व्यवस्था की जाती है। दीनदयाल आईटीआई के इन सभी छात्रों को उद्यमिता विद्यापीठ के दीनदयाल परिसर से उद्यमिता विद्यापीठ के संयोजक श्री मनोज सैनी एवं आईटीआई के प्राचार्य श्री संजय दुबे तथा फैकल्टी द्वारा ग्रुप फोटो के साथ शैक्षणिक औद्योगिक भ्रमण के लिए रवाना किया गया।

सतना की विंध्य बोर्ड प्राइवेट लिमिटेड का भ्रमण विंध्य बोर्ड के एमडी श्री वाई बी दुबे के मार्गदर्शन एवं सहयोग से सम्पन्न हुआ। जिसमें उन्होंने सभी छात्रों का मार्गदर्शन किया एवं कंपनी की हर मशीनरी के बारे में समझाया तथा छात्रों ने यह भी देखा कि कैसे स्टीम टरबाइन से और सोलर पैनल से विद्युत उत्पादन की जाती है।

विजिट के अंत मे कम्पनी के एमडी ने छात्रों की जिज्ञासा को सुना और समाधान किया तथा सभी बच्चों को देश के निर्माण में योगदान देने तथा अपने माता-पिता को सम्मान दिलाने की शुभकामनाएं दी।

औद्योगिक भ्रमण में दीनदयाल आई.टी.आई. के प्राचार्य श्री संजय दुबे ने बताया कि यह औद्योगिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी रहा, वहां विद्युत उत्पादन को क्रम से छात्रों को दिखाया व समझाया गया। भ्रमण के माध्यम से छात्र वहां के कार्यप्रणाली को गहराई से समझे। सभी विद्यार्थी भ्रमण पश्चात् वहां मिली जानकारियों से संतुष्ट हुए।

दीनदयाल प्राईवेट आई.टी.आई. प्रतिवर्ष अपने छात्रों को राज्य भर में क्रियाशील विभिन्न उद्योगों का शैक्षणिक भ्रमण कराती है ताकि विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी हो। शैक्षणिक औद्योगिक भ्रमण के दौरान दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र कोपा ट्रेड के प्रशिक्षक श्री छोटेलाल, इलैक्ट्रीशियन के ट्रैनर श्री अभिषेक चतुर्वेदी, फिटर के प्रशिक्षक श्री नारेन्द्र सिंह, श्री सुरेन्द्र कुमार प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

वर्मी कम्पोस्टिंग, मशरुम उत्पादन तथा कड़कनाथ मुर्गी पालन द्वारा उद्यमिता विकास पर कार्यशाला

मझगवां/ कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां में राष्ट्रीय विज्ञान एकेडमी भोपाल चैप्टर के सहयोग से वर्मी कम्पोस्टिंग, मशरुम उत्पादन तथा कड़कनाथ मुर्गी पालन द्वारा उद्यमिता विकास विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारम्भ आयोजित की गई। जिसमें प्रमुख रुप से डॉ. परीक्षित झाड़े मुख्य पालन अधिकारी सतना, डॉ. राजेश त्रिपाठी उप संचालक कृषि सतना, डॉ. संतोष शुक्ला सहायक कार्यकारी सचिव राष्ट्रीय विज्ञान अकेडमी प्रयागराज, डॉ. शिवेश प्रताप सिंह सचिव राष्ट्रीय विज्ञान अकेडमी भोपाल चैप्टर, श्री अभय महाजन राष्ट्रीय संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान, डॉ. उमाशंकर मिश्रा प्रोफेसर महात्मा गाँधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, डॉ. संतोष कुमार सहायक प्राध्यापक ए.के.एस. विश्वविद्यालय सतना की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यशाला में 110 प्रशिक्षणार्थियों ने सहभागिता की, जिसमें चित्रकूट ग्रामीण क्षेत्रों के युवा युवतियाँ, ग्रामोदय विश्वविद्यालय, ए.के.एस. विश्वविद्यालय, शास. महाविद्यालय सतना के अलावा किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान श्री अभय महाजन राष्ट्रीय संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान ने अपने उद्बोधन में बताया कि किसानों के परिश्रम एवं प्रयासों को लाभ से जोड़कर आर्थिक वृद्धि हेतु प्रशिक्षण, कार्यशाला कारगर साबित होती है, उन्होंने विद्यार्थियों को कहा कि आपको नौकरी देने वाला बनना है न कि नौकरी लेने वाला।

प्रशिक्षण में डा. शिवेश प्रताप सिंह ने कार्यशाला की भूमिका रखते हुए बताया कि नई शिक्षा नीति के तहत उद्यमिता विकास के द्वारा हमें रोजगार सृजित करना है। वर्मी कम्पोस्टिंग विषय पर डॉ. उमाशकर मिश्रा जी तथा डॉ. संतोष कुमार ने अपना व्याख्यान दिया।

कड़कनाथ मुर्गी पालन विषय पर डा. रामप्रकाश शर्मा तथा मशरुम उत्पादन विषय पर डॉ. अखिलेश जागरे ने व्याख्यान प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में हैन्ड्स आन ट्रेनिंग विषय पर साक्षात प्रशिक्षण दिया गया। ❑

चित्रकूट गौरव दिवस पर
दीनदयाल शोध संस्थान ने किये 1 लाख दीप प्रज्ज्वलित

राम नवमी पर आस्था के दीपों से जगमगा उठी धर्म नगरी

चित्रकूट/ विश्व प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र चित्रकूट में इस बार रामनवमी महोत्सव का भव्य आयोजन श्रद्धालुओं को गदगद कर गया। हालांकि रामनवमी महोत्सव पिछले कई वर्षों से धर्मनगरी में मनाया जा रहा है। लेकिन इस बार शासन के प्रयासों और संत समाज एवं क्षेत्र के समाजसेवियों के साथ मिलकर श्रद्धालुओं ने इसको ऐतिहासिक रूप दे दिया। धर्म नगरी में जन सहभागिता से इस तरह का यह दूसरा आयोजन था, जिसमें समाज की पहल पर सरकार की भी सहभागिता रही, और दोनों राज्यों का प्रशासन पूरी मुस्तैदी से जुटा रहा।

पवित्र एवं धार्मिक नगरी चित्रकूट का गौरव दिवस मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम के प्राकट्य दिवस रामनवमी के दिन 1 अप्रैल को मनाया गया। गौरव दिवस के अवसर पर शासन-प्रशासन एवं संत महात्माओं तथा समाज के सहयोग से पूरे चित्रकूट शहर के प्रमुख स्थानों पर 11 लाख दीप प्रज्ज्वलित किये गए, जिससे पूरा चित्रकूट जगमगा गया।

सभी संस्थाओं, मंदिर, आश्रमों, कार्यालयों को दीप प्रज्ज्वलित करने के लक्ष्य निर्धारित किए गए थे जिसमें से दीनदयाल शोध संस्थान को 1 लाख दीप प्रज्ज्वलन का लक्ष्य था। डीआरआई के द्वारा सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय गेट व राम दर्शन से लेकर उद्यमिता विद्यापीठ, आरोग्य धाम गेट तक तथा पंचवटी घाट, आरोग्यधाम परिसर, सियाराम कुटीर सहित रामनाथ गोयनका घाट पर 1 लाख से अधिक दीप प्रज्ज्वलित किये गए, जिसके लिए संस्थान के लगभग 500 कार्यकर्ता अपने पूरे परिवार सहित चिन्हित स्थानों पर शाम 5 बजे से ही तैयारी में जुट गए थे। पूर्व निर्धारित समयानुसार सांय 7 बजे से दीप प्रज्ज्वलित होना शुरू हो गये। दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, प्रधान सचिव श्री अतुल जैन, सचिव श्री राजेश महाजन ने सियाराम कुटीर एवं कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित ने आरोग्यधाम में दीप प्रज्ज्वलित किये। ❑

एन.एच.पी.सी ने आरोग्यधाम में 150 किलोवाट के सोलर पावर प्लांट की कराई स्थापना

चित्रकूट/ नेशनल हाइड्रो पावर कार्पोरेशन लिमिटेड (एन.एच.पी.सी) द्वारा दीनदयाल शोध संस्थान आरोग्यधाम परिसर चित्रकूट में निगमित सामाजिक दायित्व के अंतर्गत 150 किलो वाट के सोलर पावर प्लांट का स्थापन करवाया गया है जिसका लोकार्पण श्री राजेंद्र शुक्ला पूर्व ऊर्जा मंत्री, मध्यप्रदेश शासन, गोरेलाल वारचे वरिष्ठ कार्यकर्ता भोपाल, डॉ. भरत मिश्रा कुलपति म.गा.चि.ग्रा. विश्वविद्यालय, सदस्य श्री उत्तम बनर्जी, डॉ. सपना सिंह, डॉ. मिलिंद देवगावकर, दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन, कोषाध्यक्ष श्री वसन्त पंडित, सदस्य श्री जयदेव ताम्रकार, तहसीलदार श्री सुमित गुर्जर द्वारा ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी युगब्द 5125 दिनाँक 24 मई 2023 को विधि विधान से पूजार्चन के साथ किया गया।

प्रबन्ध मण्डल के सदस्य श्री जयदेव ताम्रकार ने बताया कि 150 किलोवाट के इस संयन्त्र में लगभग 277 आधुनिक तकनीकी से बनी मोनोकृस्टलाइन सोलर प्लेटस का उपयोग किया गया है प्रत्येक सोलर प्लेट 5.5 किलोवाट की है इसके लिए 3 अलग अलग क्षमता के इन्वर्टर लगाए गए हैं। हम सभी भी अपने अपने घरों में जितना जल्दी से जल्दी हो सके अपनी सुविधा एवम आवश्यकतानुसार इसकी स्थापना करवा लें यह हम सब के लिए उपयोगी रहेगा ।

मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र शुक्ला पूर्व ऊर्जा मंत्री, मध्य प्रदेश शासन ने कहा कि समाज एवं पर्यावरण की दृष्टि से जो भी नवाचार विश्व स्तर पर हो रहे हैं उनको अपनाने में संस्थान सदैव अग्रणी रहा है संस्थान लोगों को सदैव रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा देता है। आज पर्यावरणीय दृष्टिकोण से यह अत्यंत आवश्यक हो गया है। हम सभी सोलर पैनल अपनी छतों पर लगवाकर तापीय, थर्मल, पेट्रोलियम ईंधन पर

सामूहिक निर्भरता कम कर सकते हैं व प्रदूषण को भी कम करने में सहायक हो सकते हैं साथ ही यह आमदनी का जरिया भी बनाया जा सकता है। यदि विद्युत उत्पादन करके हम ग्रिड को देते है तो महीने भर में हम जितना विद्युत उपभोग करते हैं उसको हमारे उत्पादन से समायोजित करके शेष यदि उत्पादन अधिक हुआ है तो उसका आपको भुगतान प्राप्त हो जाता है।

संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि दीनदयाल शोध संस्थान सदैव समाजोपयोगी नवाचारों को अपनाकर बेहतर समावेशी समाज की कल्पना करता है। ऐसे संयन्त्र संस्थान के अन्य प्रकल्पों में भी स्थापित करने का प्रयत्न किया जाएगा। क्योंकि सौर प्रकाश पूरी तरह से एक अक्षय ऊर्जा स्रोत, अर्थात सूर्य के प्रकाश द्वारा नियंत्रित होता है। यह पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा की बचत करते हुए स्थिरता को प्रोत्साहित करता है। सभी सम्मानित अतिथियों का मार्गदर्शन एवं सकारात्मक सहयोग के लिए बहुत बहुत बधाई। हम इसके लिए संस्थान की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। ❑

हाईस्कूल परीक्षा में 96.8 अंक के साथ सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय का छात्र प्रतीक गुप्ता बना सतना जिला टॉपर

चित्रकूट/ सत्र 2022-23 माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्य प्रदेश का हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी का परीक्षा परिणाम घोषित हुआ जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय ने फिर एक बार कीर्तिमान स्थापित किया है। हाईस्कूल परीक्षा में प्रतीक गुप्ता ने सतना जिले में पहला स्थान प्राप्त किया है। विद्यालय के प्राचार्य श्री मदन तिवारी ने बताया कि गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी विद्यालय का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा। हाईस्कूल परीक्षा में प्रतीक गुप्ता 96.8, अतुल 95.4 तथा मेधा तिवारी ने 95.2 प्रतिशत अंक अर्जित किए हैं। इसी प्रकार हायर सेकेंडरी परीक्षा में भी उत्कृष्ट अंक प्राप्त करके छात्रों ने विद्यालय को गौरवान्वित किया है। विद्यालय के परीक्षा प्रभारी श्री अशोक दीक्षित एवं शैक्षणिक अनुसंधान केंद्र के प्रभारी श्री कालका श्रीवास्तव ने उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाले छात्रों को शुभकामनाएं दी हैं। दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने विद्यालय की इस सफलता पर मेधावी छात्रों तथा उनके अभिभावकों को बधाई दी तथा विद्यालय के शिक्षकों को भी बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि श्रद्धेय नाना जी की परिकल्पना प्रत्येक क्षेत्र में चित्रकूट में साकार रूप ले रही है। विद्यालय के शिक्षक सर्वश्री शिव शंकर पांडे, प्रदीप त्रिपाठी, अंशुमान पाठक, रामशरण द्विवेदी, विदेश तिवारी, अरविंद पुरोहित आदि ने भी छात्रों तथा अभिभावकों को बधाई दी। ❑

जन भागीदारी के तहत चित्रकूट जनपद में आयोजित हुए विविध कार्यक्रम

चित्रकूट/ जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा सभी कार्यों में जन भागीदारी को सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से शासन की मंशानुरूप 1 जून से 15 जून तक विविध कार्यक्रमों का आयोजन जनपद के विभिन्न स्थलों में आयोजित किया गया। जिसके अंतर्गत प्रभातफेरी, साइकिल-मोटरसाइकिल रैली, बेबीनार, संगोष्ठी, दौड़, विभिन्न प्रकार की प्रतियोगितायें (पेंटिंग, रंगोली, भाषण, निबन्ध, स्लोगन, योगा) उद्यमिता विकास कार्यक्रम, कैरियर काउंसलिंग, पर्यावरण संरक्षण हेतु बृहद वृक्षारोपण जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

जनभागीदारी कार्यक्रमों के अंतिम कड़ी के रूप में मानव जीवन एवं स्वास्थ्य के अंतर्गत दिनचर्या, ऋतुचर्या, योग-व्यायाम, आहार का दैनिक जीवन में महत्व एवं जिम वर्कआउट विषय पर आनलाइन बेबीनार का आयोजन जन शिक्षण संस्थान द्वारा किया गया। जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान आरोग्यधाम की वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. भारती श्रीवास्तव ने कहा कि मनुष्य को अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए आयुर्वेद का सहारा लेना चाहिए क्योंकि आयुर्वेद ही ऐसा माध्यम है जिसमें हम आजीवन स्वास्थ्य की संकल्पना (दिनचर्या, ऋतुचर्या, योग - व्यायाम, आहार) कर सकते हैं। उत्तम स्वास्थ्य ही मानव जीवन का सबसे बड़ा धन है। आजीवन स्वास्थ्य की परिकल्पना को ध्यान में रखकर राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख ने आरोग्यधाम की स्थापना की है। आयुर्वेद के अनुसार हमें अपने जीवन को

आयुर्वेद के अनुसार दिनचर्या शरीर और मन का अनुशासन है जो हमारे प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करता है।

बेहतर और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ऋतुचर्या अर्थात मौसम के अनुसार अपने आहार अर्थात खानपान का पालन करना चाहिए तथा दिनचर्या जो प्रकृति चक्र का ध्यान रखती है आयुर्वेद के अनुसार दिनचर्या शरीर और मन का अनुशासन है जो हमारे प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करता है। भोजन में 6 रस शामिल होते हैं जिनमें मधुर (मीठा) लवण (नमकीन), अम्ल (खट्टा) कटु (कड़वा), तिक्त (तीखा) कषाय (कसैला) हमें शरीर की प्रकृति के अनुसार ही भोजन करना चाहिए। इससे शरीर में पोषक तत्व का संतुलन बना रहता है।

योग व्यायाम के अंतर्गत यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि आठ अंग है। योग के इन 8 अंगों के अभ्यास से सामाजिक तथा व्यक्तिगत आचरण में सुधार आता है। शरीर में आक्सीजन युक्त रक्त के भली-भांति संचरण से शरीर स्वस्थ रहता है। इंद्रियां संगठित तथा मन को शांति व पवित्रता मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम 30 से 40 मिनट का व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए संस्थान के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह ने कहा कि जन भागीदारी का आशय नीतियों के कार्यान्वयन में समाज के सभी लोगों की सामूहिक भूमिका। हम सभी और अधिक नवाचार, संसाधनों के बेहतर उपयोग और स्वामित्व की भावना में वृद्धि से लाभान्वित हो सकते हैं।

हम सभी वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को आत्मसात कर परिवार, समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। ❑

चित्रकूट हुआ योगमय, 108 स्थानों पर चला योग शिविर

स्वावलम्बन एवं सम्पर्कित ग्रामीण केन्द्र भी हुए योगमय

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट की सभी प्रमुख संस्थाओं, संत महात्माओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से नगर के साथ-साथ ग्रामीण स्वावलम्बन केन्द्रों पर भी योग की बात पहुंच सके इसके लिये लगभग दो सैकड़ा लोगों को 8 से 10 जून तक योग प्रशिक्षक डॉ. तुषार कांत शास्त्री द्वारा आरोग्यधाम में प्रशिक्षण दिया गया।

उसके बाद सभी चिन्हित 108 स्थानों पर दि. 11 जून से 20 जून तक सुबह 6 से 7 बजे तक प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा प्राणायाम, मुद्राभ्यास, सन्धियोग, योगासन और सूर्य नमस्कार की सभी क्रियायें एवं आसन कराये गये। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून को सामूहिक वृहद कार्यक्रम सदगुरु पब्लिक स्कूल, सदगुरु सेवा संघ ट्रस्ट के खेल प्रांगण में आयोजित किया गया।

गौरतलब है कि इसके पूर्व 3 बार 21 जून का सामूहिक वृहद कार्यक्रम ग्रामोदय विश्वविद्यालय में तथा 2 बार डीआरआई के सुरेंद्रपाल विद्यालय खेल प्रांगण में तथा 1 बार सदगुरु सेवा संघ के खेल प्रांगण में किया जा चुका है।

चित्रकूट क्षेत्र के सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान, सभी प्रमुख मंदिर, आश्रम एवं समाजसेवी समुदाय के सहयोग से प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा नियमित योग क्रियाएं कराई गई।

दीनयाल शोध संस्थान के उप महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल ने बताया कि चित्रकूट जनपद तथा मझगवां जनपद के स्वावलम्बन केन्द्रों एवं सम्पर्कित ग्रामीण केन्द्रों पर भी ग्रामवासियों की भागीदारी के साथ योग के इन प्रयोगों को नियमित रूप से किया गया।

स्वामी विवेकानंद जी के विचार थे कि भारत को तभी नए सिरे से मजबूत किया जा सकता है, जब व्यक्तित्व निर्माण में योग को नियमित रूप से जोड़ा जाए। योग के माध्यम से एक व्यक्ति को समाज से जोड़ने की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है। योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। जिसमें शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है।

विगत 9 वर्षों से 21 जून को पूरा देश विश्व योग दिवस के रूप में मना रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के अथक प्रयासों से योग को विश्व मंच पर पहुंचाने का कार्य हुआ है। इस दृष्टि से चित्रकूट में सभी मठ-मंदिरों, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ता व नगरवासी एक साथ सामूहिक रूप से मिलकर 21 जून को योग क्रियाएं करते हैं। उसके पूर्व नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों के कई केंद्रों पर योग का अभ्यास किया जाता है। हर वर्ष सभी संस्थाओं के सामूहिक विचार-विमर्श से अलग-अलग स्थानों पर योग क्रिया की जाती रही हैं। ❑

जिला कारागार रगौली में मनाया गया योग दिवस

चित्रकूट/ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला कारागार रगौली परिसर में जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा जनभागीदारी के अन्तर्गत महिला-पुरुष बन्दियों को योग कराया गया। इस अवसर पर श्री सूर्यकांत दुबे (सीजेएम) चित्रकूट, फारूक इनाम सिद्दीकी (ए.डी.जे), जेल अधीक्षक श्री शशांक पाण्डेय, जेलर श्री राजीव कुमार सिंह, उप-जेलर श्री रजनीश सिंह, श्री ज्ञान स्वरूप दुबे एवं जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह उपस्थित रहे।

विश्व योग दिवस पर अपने उद्बोधन में श्री सूर्यकांत दुबे (सीजेएम) चित्रकूट ने कहा कि जीवन में चार सोपान होते हैं चारों सोपानों को व्यवस्थित रखने के लिए 14 इंद्रियां होती हैं। जिसमें पांच कर्मेंद्रियां पांच ज्ञानेंद्रियां एव 4 सूक्ष्म इंद्रियां होती हैं जो अंतः करण की दशा को प्रगट करती हैं। जिसमें मन बुद्धि अहंकार और चित् जीवन को आरोग्य रखने के लिए जिस प्रकार आयुर्वेद जीवनदायिनी है। उसी प्रकार इन चारों सूक्ष्म सोपानों को स्वस्थ रखने के लिए हमारे जीवन में योग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

फारूक इनाम सिद्दीकी (ए.डी.जे) ने कहा कि योग केवल 1 दिन ना हो बल्कि इसे जीवन का आधार बनाएं एवं अपने जीवन में योग को नियमित चलने वाले क्रिया विधि के रूप में अपनाकर इसे अपने जीवन में उतारे और सदैव स्वस्थ रहें। जेल अधीक्षक श्री शशांक पाण्डेय ने कहा कि उत्तम स्वास्थ्य जीवन का सबसे बड़ा धन है। योग के माध्यम से एक व्यक्ति को समाज से जोड़ने की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है। योग द्वारा शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है। जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत जन भागीदारी से इस बार पतंजलि योग पीठ के बन्धु श्री नरेंद्र चंद्रवंशी, श्री प्रमोद एवं बहनें मंजू व मनीषा केशरवानी के सहयोग से जिला कारागार में महिला व पुरुष बन्दियों को निरोगी रहने के दृष्टिकोण से प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया।

जिसमे प्रशिक्षकों द्वारा प्राणायाम, मुद्राभ्यास, संधियोग, योगासन एवं सूर्य नमस्कार की सभी क्रियाएं व आसन सिखाये गए क्योंकि योग शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति तथा सकारात्मक ऊर्जा व शांति के लिए अति आवश्यक है। हम सभी इसे अपने जीवन में समाहित करें ऐसी सभी से अपेक्षा है। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं संयोजन जेलर श्री राजीव कुमार सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन उप-जेलर श्री रजनीश सिंह ने किया। ❑

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश सरकार ने कसा माफिया, गुंडे, बदमाशों और आतंक पर शिकंजा

मध्यप्रदेश शांति का टापू है, यहाँ अशांति फैलाने वालों की खैर नहीं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के कड़े फैसले और प्रशासनिक कसावट से प्रदेश में कानून का राज स्थापित है। प्रदेश की शांति व्यवस्था में खलल डालने की कोशिश करने वालों को कड़ी कार्रवाई का सामना करना पड़ रहा है। माताओं, बहनों, बेटियों की ओर गलत नजर उठाने वालों के घरों पर बुलडोजर चल रहे हैं। बच्चियों के साथ दुराचार करने वालों को मृत्युदंड दिया जा रहा है। प्रदेश में एंटी माफिया अभियान चलाकर भू-माफिया, चिटफंड माफिया, शराब माफिया, खनन माफिया, राशन माफिया, मिलावट माफिया और दबंगों के विरुद्ध सख्ती से कार्रवाई की जा रही है।

▫ तोड़ी माफिया की कमर

प्रदेश सरकार ने भू-माफियाओं से हजारों एकड़ से ज्यादा सरकारी भूमि मुक्त कराई है। अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध 1 हजार 161 प्रकरण दर्ज कर 605 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। शासकीय भूमि पर अवैध कब्जा करने वाले 227 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका एवं 582 आरोपियों के विरुद्ध जिला बदर की कार्रवाई की। आदतन अपराधियों और गुंडों पर भी पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है।

▫ पुलिस कमिश्नर प्रणाली

कानून-व्यवस्था में वर्ष 2022 ऐतिहासिक उपलब्धियों वाला रहा। भोपाल और इंदौर की कानून-व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाये रखने के लिये पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू की गई।

▫ नक्सली उन्मूलन

पिछले 23 वर्षों में पहली बार वर्ष 2022 में एक वर्ष में एक करोड़ 14 लाख रुपए के 6 इनामी नक्सली मार गिराये गये। इतिहास में प्रथम बार डिवीजनल कमांडर स्तर के नक्सली को मार गिराया गया और 2 एके-47 जब्त की गईं।

▫ ऑपरेशन मुस्कान

प्रदेश में जोर-जबरदस्ती, बहला-फुसलाकर विवाह और धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए धर्म स्वातंत्र्य विधेयक लागू। इसमें 110 से अधिक प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। वर्ष 2018 से अब तक बच्चियों से दुष्कर्म करने वाले 42 दोषियों को मृत्युदंड की सजा। ऑपरेशन मुस्कान में वर्ष 2022 में अब तक 9 हजार 413 बालिकाओं और 2 हजार 205 बालकों को मुक्त कराया गया।

▫ साइबर अपराधों पर अंकुश

राज्य सरकार साइबर अपराधों से निपटने के लिए सजग। सोशल मीडिया पर निरंतर नजर। देश को कमजोर करने की गतिविधियों में संलग्न संगठनों पर लगातार कार्रवाई।

गांजे की खेती करने वाले धराए

अवैध शराब बेचने वालों को पकड़ा

▫ डकैतों का हो गया सफाया

प्रदेश में डकैतों का आतंक अब पूरी तरह खत्म। डकैती के सभी बड़े लिस्टेड गैंग का खात्मा करने में पुलिस को बड़ी सफलता मिली। सूदखोरी पर पुलिस ने शिकंजा कसा। नशे और इसकी लत को रोकने के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं।

▫ **खनन माफिया:** 13 हजार 178 अपराध दर्ज। 24 हजार 092 से अधिक चार पहिया वाहन 3 लाख 54 हजार 528 घन मीटर अवैध रेत जब्त। 04 रासुका एवं 34 जिला बदर।

▫ **राशन माफिया:** 1626 अपराध दर्ज कर 1780 आरोपी गिरफ्तार कर लगभग 91 करोड़ रुपये मूल्य के खाद्य पदार्थ जब्त एवं 68 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका की कार्रवाई।

▫ **चिटफंड माफिया:** 1 लाख 47 हजार 532 से अधिक निवेशकों को करोड़ों की राशि वापस दिलाकर राहत पहुँचाई गई।
860 प्रकरण दर्ज।

▫ **शराब माफिया:** 4 लाख 21 हजार से अधिक प्रकरणों में 3 लाख 57 हजार से अधिक आरोपी गिरफ्तार।
40 लाख 72 हजार लीटर अवैध शराब एवं 4005 वाहन जब्त।

▫ **मिलावट:** 4392 प्रकरण दर्ज एवं 657 आरोपी गिरफ्तार।
लगभग 27 करोड़ रुपये के मिलावटी खाद्य पदार्थ जब्त।
85 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका की कार्रवाई।

पुलिस की पैदल गश्त से अपराधियों में खौफ, प्रधानमंत्री ने भी पहल को सराहा

प्रदेश पुलिस द्वारा मूलभूत पुलिसिंग में शुरू की गई पैदल गश्त की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी प्रशंसा की है। बीट व्यवस्था, माइक्रो बीट सिस्टम, औचक निरीक्षण, कोम्बिंग ऑपरेशन और रात्रि गश्त व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

पुलिस के सड़क पर मौजूद होने का असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण के साथ सामान्य व्यवस्था बनाए रखने में प्रभावी होता है। सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों में चल रही भ्रांतियों और गलत जानकारियों का तत्काल खंडन किया जा रहा है। आवश्यकता होने पर उपयुक्त कार्रवाई भी तत्काल सुनिश्चित की जा रही है।

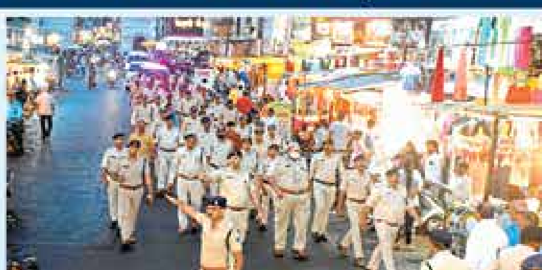

असली हीरो को सम्मान

मध्यप्रदेश में अपराधियों का सामना करने में साहस और वीरता का परिचय देने वाले नागरिकों को असली हीरो सम्मान से सम्मानित किया जा रहा है। इनमें बड़वानी की वर्षा बाई वास्केल, कमला बाई और भूरी बाई, मुरैना के मुकेश सिंह गुर्जर, दमोह की मोनिका सिंह अहिरवार, इंदौर की प्रगति तिवारी, गुना और छतरपुर के शिवम तिवारी को असली हीरो प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया है।

पुलिस को मिले पुरस्कार

प्रदेश को इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा डिजिटल इंडिया अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया है। प्रदेश को ई-विवेचना एप के उपयोग के लिये *इनिशिएटिव इन डाटा शेयरिंग एंड यूज* केटेगरी में प्रथम पुरस्कार मिला। एन्युअल इन्फॉर्मेशन सिक्योरिटी समिट में मध्यप्रदेश साइबर पुलिस को पुलिस की क्षमता निर्माण में प्रथम पुरस्कार और *साइबर कॉप ऑफ द ईयर में दूसरा पुरस्कार मिला है।*

आरएनआई नं. दिल्ली-एन/2002/7201

लाड़ली बहनों के लिए एक और बड़ी खुशखबरी

1 सितम्बर से रसोई गैस सिलिंडर मिलेगा सिर्फ ₹450 में

भैया शिवराज सिंह चौहान ने की सिलिंडर रीफिलिंग योजना की शुरुआत

"प्रिय लाड़ली बहनों, रक्षाबंधन के अवसर पर 27 अगस्त को मैंने आप सभी को वचन दिया था कि सावन के महीने में ₹ 450 में आप सभी को गैस सिलिंडर प्राप्त होगा। मैंने यह भी कहा था कि ₹ 450 में गैस सिलिंडर मेरी लाड़ली बहनों को मिले इसकी स्थायी व्यवस्था भी मेरी सरकार करेगी। मैंने वो वचन पूरा करते हुए इसके लिये योजना लागू कर दी है। आप सभी से अपील करता हूं कि इसके लिए बहनें आवेदन भरें ताकि पोर्टल पर पंजीयन हो सके।"

शिवराज सिंह चौहान

पात्रता

- ऐसी बहनों को पात्रता होगी जो पूर्व से गैस कनेक्शनधारी हों।
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना लाभार्थी बहनें भी पात्र होंगी।

पंजीयन

- मुख्यमंत्री लाड़ली बहना पोर्टल पर पंजीयन होगा।
- केवल दो दस्तावेज आवश्यक होंगे, एलपीजी कनेक्शन आईडी एवं समग्र आईडी।
- पंजीयन उन सभी केंद्रों पर, जहां लाड़ली बहना योजना का पंजीयन होता है, किया जायेगा।
- शासन ऑयल कम्पनी से पात्र बहनों की जानकारी प्राप्त कर, उसका प्रदर्शन 25 सितम्बर को उक्त पोर्टल पर करेगा।
- बहनों की समस्या निराकरण हेतु 'शिकायत निवारण एप्लीकेशन' भी उपलब्ध होगी।

अनुदान राशि

- पात्रताधारी बहनों को प्रतिमाह अधिकतम एक रीफिल पर अनुदान।
- लाड़ली बहनें ऑयल कम्पनी से कम्पनी की दर पर गैस रीफिल करायेंगी। ₹450 से ऊपर की राशि बहनों के बैंक खाते में रीफंड की जायेगी।
- सावन माह, 4 जुलाई से 31 अगस्त तक गैस रीफिल कराने वाली बहनों को भी अनुदान उनके बैंक खातों में दिया जायेगा।